जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्र विधान

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

हस्तिनापुर में निर्मित विश्व की अद्वितीय जम्बूद्वीप रचना

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में निर्मित स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 520
ISBN-978-93-87891-40-1

जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र विधान

–रचयित्री–

भारतगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

दिव्यशक्ति, चारित्रचन्द्रिका, परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षा गुरु चारित्रचूड़ामणि प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की 144वीं जन्मजयंती आषाढ़ शु. पूर्णिमा, वीर निर्वाण संवत् 2546 (5 जुलाई 2020) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2546	मूल्य
1100 प्रतियाँ	आषाढ़ शु. पूर्णिमा, 5 जुलाई 2020	28/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

डॉ. जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

मोक्ष प्राप्ति के लिए आगम में दो मार्ग बताएँ हैं – भक्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग। जिसमें भगवान भी भक्ति करने के विभिन्न माध्यमों में से एक है पूजन विधान आदि करके कर्मों की निर्जरा कर पुण्य का संचय करना।

बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी माताजी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी माताजी ने सर्वप्रथम ग्रंथ रचना का कार्य प्रारंभ किया और 400 से अधिक ग्रंथों का लेखन किया, जिसमें अनेक पूजन-विधान भी हैं। पूज्य माताजी ने अनेक बड़े-बड़े विधानों के साथ छोटे-छोटे विधान भी लिखें हैं। जिन्हें भक्तगण एक दिन में करके भक्ति सरिता में अवगाहन कर आनंद की अनुभूति करते हैं। इस युग में एक जैन भूगोल की रचना जो 'जम्बूद्वीप' के नाम से सारे विश्व में प्रसिद्ध है पूज्य माताजी की प्रेरणा से हस्तिनापुर (उ.प्र.) में निर्मित है। पूज्य माताजी ने उसी जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में शाश्वत कर्मभूमियों में स्थित तीर्थंकर, गणधर आदि पूज्य महापुरुषों एवं तीर्थों की पूजा करने हेतु ''जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्र विधान'' की रचना कर हमें प्रदान किया है ताकि यहीं बैठकर हम साक्षात विद्यमान उन तीर्थंकर भगवन्तों आदि की पूजा कर पुण्य प्राप्त कर सकें। यह विधान आप सबके सम्यग्दर्शन को दृढ़ करने में सहकारी बनें और एक दिन साक्षात् उस विदेह क्षेत्र में विराजमान तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि के पान का अवसर प्राप्त हो, यही मंगल भावना है।

भगवान की भक्ति से कर्मों का भी क्षय हो जाता है–

भत्तीए जिणवराणं, खीयदि जं पुव्वसंचियं कम्मं।
आयरियपसाएण य, विज्जा मंता य सिज्झंति।।13।।

(मूलाचार गाथा-571)

आद्य वक्तव्य

-गणिनी ज्ञानमती

मध्यलोक में असंख्यात द्वीप-समुद्र माने गये हैं। उनमें से सर्वप्रथम द्वीप का नाम जम्बूद्वीप है। इसमें दक्षिण में भरतक्षेत्र, उत्तर में ऐरावत क्षेत्र, पूर्व में विदेह क्षेत्र में सोलह विदेह देश एवं पश्चिम विदेह में सोलह विदेहदेश हैं। ऐसे जम्बूद्वीप में ये चौंतीस कर्मभूमियाँ हैं। इनमें से भरत और ऐरावत क्षेत्र के आर्यखण्ड में सदा ही षट्काल परिवर्तन होता रहता है तथा विदेह क्षेत्र में बत्तीस ही विदेहों में आर्यखण्डों में हमेशा ही शाश्वत कर्मभूमि है। वहाँ षट्काल परिवर्तन नहीं है।

इन्हीं बत्तीस विदेहों में वर्तमान में श्री सीमंधर स्वामी आदि चार तीर्थंकरों के समवसरण विद्यमान हैं। इसीलिए ये तीर्थंकर विद्यमान या विहरमाण कहलाते हैं। ऐसे ही पूर्वधातकी खण्ड में बत्तीस शाश्वत विदेहक्षेत्रों में व पश्चिमधातकी खण्ड के बत्तीस विदेह क्षेत्रों में इन तीर्थंकरों से आगे के 'संजातस्वामी' आदि चार-चार तीर्थंकर विद्यमान हैं तथा इसी प्रकार पूर्वपुष्करार्ध में व पश्चिम पुष्करार्ध में बत्तीस-बत्तीस विदेहक्षेत्रों में चार-चार तीर्थंकर विद्यमान हैं। ऐसे ये 4+4+4+4+4=20 तीर्थंकर आज भी विद्यमान हैं। जम्बूद्वीप में एक भरतक्षेत्र व एक ऐरावत क्षेत्र, धातकीखण्ड में दो भरत, दो ऐरावत क्षेत्र, पुष्करार्ध द्वीप में दो भरत व दो ऐरावत क्षेत्र ऐसे पाँच भरत, पाँच ऐरावत ये (2+2+2+2+2=10) दश भरत-ऐरावत हैं। अतः ढाईद्वीप तक कुल मिलाकर 5 भरत, 5 ऐरावत, 160 विदेह क्षेत्र ये 5+5+160=170 कर्मभूमियाँ हैं। इनमें से दश कर्मभूमियों में कालपरिवर्तन होने से अभी पंचमकाल चल रहा है और 160 विदेहक्षेत्रों में सदाकाल ही शाश्वत कर्मभूमियाँ हैं।

इन्हीं में से जम्बूद्वीप के बत्तीस विदेह क्षेत्रों के तीर्थंकर गणधर, केवली, श्रुतकेवली, मुनिगण आदि का यह विधान है। यह मेरे द्वारा रचित जम्बूद्वीप विधान से ही उद्धृत या संकलित है।

इस विधान को करके आप सभी शाश्वत पुण्य संपादित करें, यही मेरी प्रेरणा व भावना है।

प्रस्तावना

-आर्यिका सुदृढ़मती (संघस्थ)

प्रिय पाठकों! आपके हाथों में है-जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र विधान।

सर्वप्रथम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित इस विधान में विद्यमान बीस तीर्थंकरों की संस्कृत और हिन्दी में स्तुति है पुनः मंगल स्तुतिपूर्वक सभी के मंगल की कामना की गई है।

इस विधान की पूजा नं. 1 में जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में विराजमान विहरमाण सीमंधर, युगमंधर, बाहु और सुबाहु तीर्थंकर भगवान की पूजा करके उनके 4 अर्घ्य चढ़ाये गये हैं। जयमाला में पूज्य माताजी ने बहुत ही सुन्दर भाव संजोयें हैं और लिखा है-

हो कम से कम तो चार तीर्थंकर हमेश ही।
मैं नित्य नमन करूँ आप विद्यमान ही।।
हो शीघ्र दर्श आपका ये मेरी प्रार्थना।
तुम दिव्यध्वनि को सुनूँ बस एक याचना।।

द्वितीय पूजा में जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में स्थित 32 शाश्वत कर्मभूमियों में होने वाले त्रैकालिक सर्वतीर्थंकर, केवलि, गणधर, श्रुतकेवली और आचार्य, उपाध्याय, साधुओं की पूजा कर उनके अर्घ्य चढ़ाये गये हैं। विदेह के इन 32 देशों से संबंधित 7-7 अर्घ्य चढ़ाने से इस पूजा में (32×7=224) कुल 224 अर्घ्य हो गये हैं तथा 4 पूर्णार्घ्य और जयमाला है।

अंत में पूज्य माताजी ने बड़ी जयमाला लिखकर जम्बूद्वीप की महानता, पूज्यता का वर्णन किया है तथा हस्तिनापुर में निर्मित कृत्रिम जम्बूद्वीप रचना तथा उसमें स्थित 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत का भी उल्लेख करते हुए लिखा है कि भले ही आज हम उस अकृत्रिम सुमेरु पर्वत की वंदना नहीं कर सकते पर यदि हम यहाँ निर्मित सुमेरु पर्वत के भी दर्शन व वंदना करते हैं तो सातिशय पुण्य का अर्जन होकर, पापों का नाश होता है और अनंत उपवासों के करने का फल प्राप्त होता है। सभी की मनोकामनाएँ सफल होती हैं। पूज्य माताजी ने अपनी प्रासुक लेखनी से अनेकानेक पूजन-विधानों को प्रसूत कर आज सभी भक्तों के लिए भक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया है जिसके माध्यम से अनेक भव्यप्राणी अपने असंख्य कर्मों की निर्जरा कर रहे हैं। वर्तमान की साक्षात् सरस्वती स्वरूपा पूज्य माताजी के लिए ये पंक्तियाँ तभी सार्थक हैं–

ज्ञानमती माताजी तेरी यही निशानी।
एक हाथ में पिच्छी दूजी में जिनवाणी।।

पूज्य माताजी के चरणों में ज्ञानावरण कर्म के क्षय हेतु कोटिशः वंदामि।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन

प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि।

21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील एवं 22 अक्टूबर 2018 को ऋषभदेवपुरम्-मांगीतुंगी (महा.) में माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ जी कोविन्द द्वारा पूज्य माताजी के ससंघ सान्निध्य में 'विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन' का उद्घाटन।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेदशिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ मांगीतुंगी (2015-2016) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृ. संख्या
1.	बीस तीर्थंकर स्तुतिः (संस्कृत)	9
2.	बीस तीर्थंकर नाम स्तुति (हिन्दी)	11
3.	मंगल स्तुति	12
4.	सीमंधर आदि चार तीर्थंकर पूजा	14
5.	जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्र पूजा	21
6.	बड़ी जयमाला	72
7.	प्रशस्ति	76
8.	भजन	77
9.	जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र विधान की आरती	78

मण्डल का नक्शा

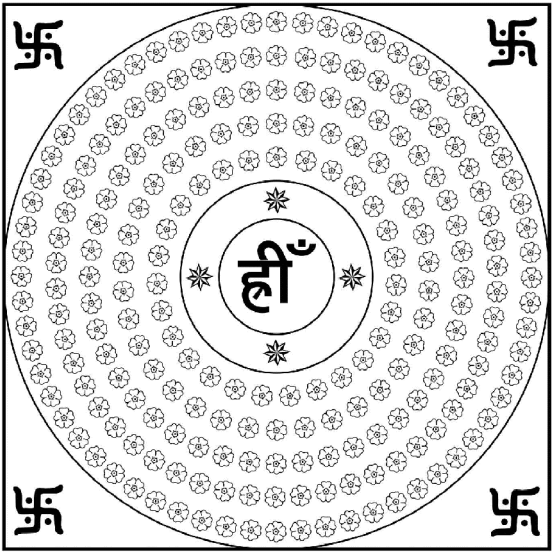

इस विधान में 2 पूजा, 228 अर्घ्य और 5 पूर्णार्घ्य, 3 जयमाला है।

जंबूद्वीप विदेहक्षेत्र विधान

अनादिनिधन मूलमंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।

बीस तीर्थंकर स्तुतिः

श्रीमान् सीमंधरो देवः, भगवान् युगमंधरः।
बाहुस्वामी सुबाहुश्च, श्रीसुजातः स्वयंप्रभुः।।1।।

वृषभाननतीर्थेशो-ऽनंतवीर्यः जिनेश्वरः।
सूरिप्रभः श्रीविशाल-कीर्तिर्वज्रधरो जिनः।।2।।

चंद्राननो भद्रबाहुः, भुजंगमस्तथेश्वरः।
नेमिप्रभो वीरसेनः, महाभद्रो महानपि।।3।।

देवयशोऽजितवीर्यश्-चेत्येते विंशतिर्जिनाः।
कुर्वंतु मंगलं नित्यं, विद्यमाना विदेहजाः।।4।।

जम्बूद्वीपेऽथ मध्येऽस्ति, मेरोः पूर्वापरदिशोः।
पूर्वापरविदेहौ तन्-मध्ये नद्यौ च द्वे अपि।।5।।

ततश्चतुर्भागेष्वपि, चतुर्वक्षारशैलतः।
त्रिविभंगानदीभिश्चा-प्यष्टौ भागा विदेहके।।6।।

द्वात्रिंशत् ये विदेहो स्युः, तावंतः प्रतिमेर्वपि।
विदेहनामक्षेत्राणि, षष्ट्युत्तरशतानि वै।।7।।

सीताया उत्तरे भागे, ह्यास्ते सीमंधरो जिनः।
दक्षिणे राजते चापि, युगमंधरतीर्थकृत्।।8।।

सीतोदापाचि श्रीबाहुः, सुबाहुरुत्तरे तटे।
प्रत्यहं विहरन्तो ये, कुर्युरत्रापि मंगलम्।।9।।

पंचमहाविदेहेषु, चतुश्चतुर्जिनेश्वराः।
एवं विंशतयोऽप्येते, विहरंति सदा भुवि।।10।।

हीनादपि विंशतियो, युगपत् चाधिका अपि।
सप्तत्युत्तरशतानि, तीर्थंकरा भवंत्यपि।।11।।

भरतैरावतस्थानां, संख्येयं दशमेलने।
तांस्तान् सर्वांश्च वंदेहं, ज्ञानमत्यै श्रियै ध्रुवं।।12।।

केचिच्च द्वित्रिकल्याणा, अपि तत्र भवंत्यमीः।
सर्वे पुनंतु मे चित्तं, पंचकल्याणनायकाः।।13।।

स्तोत्रमेवं पठेन्नित्यं, दर्शनं प्राक् करोत्यसौ।
सीमंधरजिनस्यानु, सर्वकल्याणभाग् भवेत्।।14।।

बीस तीर्थंकरनाम स्तुति

श्रीमान् सीमंधर युगमंधर, बाहू जिन तथा सुबाहू हैं।
संजात स्वयंप्रभ वृषभानन, श्रीअनंतवीर्य को ध्याऊँ मैं।।
श्री सूरप्रभ विशालकीर्ति, जिनराज वज्रधर चन्द्रानन।
श्री भद्रबाहु जिन भूजंगम, ईश्वर नेमिप्रभ शिवासान।।1।।

श्री वीरसेन और महाभद्र, जिनदेव देवयश अजितवीर्य।
ये बीस जिनेश्वर विद्यमान, रहते विदेह में जगतकीर्त्य।।
इन सबको मेरा नमस्कार, हों बार-बार ये सुखकारी।
ये बीसों तीर्थंकर नितप्रति, हों हम सबको मंगलकारी।।2।।

इस जंबूद्वीप मध्य मेरू के, पूर्व अपर दिश में जानो।
ये पूर्व और पश्चिम विदेह, इन दोनों मध्य नदी मानो।।
इस विध इन चारों भागों में, चउ-चउ वक्षार शैल माने।
त्रय-त्रय विभंगनदियों से भी, इक-इक के आठ भेद माने।।3।।

ये सब विदेह बत्तीस हुये, इस विध प्रत्येक मेरु के भी।
बत्तिस-बत्तीस कहे इससे, हैं इक सौ साठ विदेह सभी।।
इस जंबूद्वीप में सीमा के, उत्तर में 'सीमंधर' जिन हैं।
सीता नदि के दक्षिण तट में, नित राजित 'युगमंधर' जिन हैं।।4।।

सीतोदा दक्षिण 'बाहू' जिन, उत्तर दिश में 'सुबाहु' राजें।
वे विहरें वहाँ तथापि यहाँ, पर भी हों नित मंगल काजें।।
पांचों भी महाविदेहों में, हैं चार-चार जिन तीर्थंकर।
ये बीसों नित्य विहरते हैं, शाश्वत् जिनवर इस पृथ्वी पर।।5।।

कम से कम बीस तथा युगपत, हों अधिक-अधिक भी यदी कभी।
इक सौ सत्तर हो सकते हैं, तीर्थंकर जग में कभी-कभी।।
भरतैरावत दश क्षेत्रों के, दश मिलने से ही यह गणना।
ध्रुव 'ज्ञानमती' लक्ष्मी हेतू, उन सबको वंदन पुनः पुनः।।6।।

कोई-कोई जिन विदेह में, दो तीन कल्याणक को भि धरें।
औ पंचकल्याणक के स्वामी, वे सब मम चित्त पवित्र करें।।
जो नितप्रति यह स्तुती पढ़ें, वे पहले सीमंधर जिन के।
दर्शन करते हैं फिर निश्चित, संपूर्ण कल्याणक को भजते।।7।।

मंगल स्तुति

त्रिलोकं त्रिकालोद्भवं द्रव्यसर्वं। अनंतैर्गुणैः सर्वपर्याययुक्तः।।
विजानाति रागच्युतो यः प्रशास्ता। स देवः प्रकुर्यात् सदा मंगलं मे।।1।।

सुचन्द्रांशु-गंधाम्बुतः शीतला या। भवव्याधि-शान्त्यै सुपीयूषवाक् सा।।
सरित्सप्त-भंग्यात्मका मां पुनातु। सुवाणी च कुर्यात् सदा मंगलं मे।।2।।

कषायादि-भोगादि-शून्यो गुरुर्यः। विवस्त्रो विशस्त्रोऽनुकम्पापरश्च।।
भवाब्धेस्तरन् तारयन् यश्च जीवान्।निमग्नान् स कुर्यात् सदा मंगलं मे।।3।।

समुद्धृत्य जीवान् जगद्दुःखतो यः। धरत्युत्तमे धाम्नि धर्मः स एव।।
श्रितानां त्रिलोकेश-संपत्प्रदाता।। सुधर्मः प्रकुर्यात् सदा मंगलं मे।।4।।

गुरोर्देशनां प्राप्य चित्ते निदध्याम्। क्रुधादीन् परित्यज्य विद्याफलं च।।
लभेयास्तु सर्वैः क्षमावत्सलत्वं। कुरु ''ज्ञानमत्याशु'' धीः मंगलं मे।।5।।

-पद्यानुवाद-शंभुछंद-

जिनने तीन लोक त्रैकालिक, सकल वस्तु को देख लिया।
लोकालोक प्रकाशी ज्ञानी, युगपत् सबको जान लिया।।
राग-द्वेष जर मरण भयावह, नहिं जिनका संस्पर्श करें।
अक्षय सुख पथ के वे नेता, जग में मंगल सदा करें।।1।।

चन्द्र किरण चन्दन गंगाजल, से भी जो शीतल वाणी।
जन्म मरण भय रोग निवारण, करने में है कुशलानी।।
सप्त भंगयुत स्याद्वादमय, गंगा जगत् पवित्र करे।
सबकी पाप धूलि को धोकर, जग में मंगल नित्य करे।।2।।

विषय वासना रहित निरंबर, सकल परिग्रह त्याग दिया।
सब जीवों को अभयदान दे, निर्भय पद को प्राप्त किया।।
भव समुद्र में पतितजनों को, सच्चे अवलम्बन दाता।
वे गुरुवर ! मम हृदय विराजो, सब जग को मंगल दाता।।3।।

अनन्त भव के अगणित दुःख से, जो जन का उद्धार करे।
इन्द्रिय सुख देकर शिव सुख में, ले जाकर जो शीघ्र धरे।।
धर्म वही है तीन रत्नमय, त्रिभुवन की सम्पति देवे।
उसके आश्रय से सब जन को, भव–भव में मंगल होवे।।4।।

श्री गुरु का उपदेश श्रवण कर, नित्य हृदय में धारें हम।
क्रोध मान मायादिक तजकर, विद्या का फल पावें हम।।
सब से मैत्री दया क्षमा हो, सबसे वत्सल भाव रहे।
''सम्यग्ज्ञानमती'' प्रगटित हो, सकल अमंगल दूर रहें।।5।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

सीमंधर आदि चार तीर्थंकर पूजा

—स्थापना–नरेन्द्र छंद —

मध्य लोक के मध्य प्रथम यह जंबूद्वीप मनोहर।
इसके बीच सुमेरू पर्वत सर्वश्रेष्ठ इस भू पर।।
इसके पूर्व अपर विदेह में, राजें चार जिनेश्वर।
उनका यहाँ करूँ आह्वानन पूजूँ भक्ति भावधर।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकर–समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकर–समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकर–समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

—अष्टकं–नरेन्द्र छंद —

कमल पराग मिलित जल सुरभित, जिनपद कमल चढ़ाऊँ।
भव-भव तृषा बुझावन कारण, तुम पद प्रीति लगाऊँ।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चन्दन दाह निकन्दन, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
हृदय ताप विनिवारण कारण, तुम पद भक्ति बढ़ाऊँ।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हार तुषार बर्फ सम तंदुल, श्याम जीर सित लाए।
आतम अनुभव अमृत हेतु, तुम पद पुंज रचाये।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवंती वासंती चंपक, माला गूंथ बनाई।
मार विजयी जिनपद पंकज में निज, सुख हेतु चढ़ाई।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दधि शर्कर केसर एला, मिश्रित श्रीखंड बनाया।
भव भव क्षुधारोग वारण को, तुम ढिग आय चढ़ाया।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः क्षुधोरागविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक की वर्धमान लौ, जगमग जगमग भासे।
तुम चरणों की आरती करते, भेद विज्ञान प्रकाशे।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला चंदन कर्पूरादिक, मिश्रित धूप सुगंधी।
जिन सन्मुख अग्नी में खेऊँ, धूम उड़े दिश अंधी।।

सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मौसम्बी खर्बूजा ककड़ी, खर्जूरादि मंगाये।
शिवरमणी परमानंद हेतु, भर भर थाल चढ़ाये।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध तंदुल माला चरु, दीप धूप फल लाके।
अर्घ चढ़ाऊँ बलि बलि जाऊँ, निज सम्यक् निधि पाके।।
सीमंधर युगमंधर बाहु, और सुबाहु जिनेश्वर।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जजूँ चार तीर्थेश्वर।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतिधार दे मैं जजूँ, चिन्मय जिनवर बिंब।
आत्यंतिक शांती करो, हरो सकल जगदंभ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

धर्मतीर्थ कर्तार हैं, विहरमाण जिनराज।
जिनकी प्रतिमा पूजते, कुसुम चढ़ाऊँ आज।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रत्येक अर्घ्य

(4 अर्घ्य)

–दोहा–

तीर्थंकर के पदकमल, नमूँ नमूँ सुखकंद।
पुष्पांजलि कर पूजते, नशे सकल भवकंद।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

श्री मेरु सुदर्शन के पूरब विदेह सीता के उत्तर तट।
है पुंडरीकिणी पुरी पिता श्रेयांस सती माता विश्रुत।।
वृषचिह्न सहित सीमंधर भगवान अभी भी राजे हैं।
मैं उनको अर्घ्य चढ़ा करके पूजूँ आतम सुख भासे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसीमंधरजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीमेरु सुदर्शन के पूरब, विदेह सीता नदी दक्षिण में।
दृढ़रथ पितुमात सुतारा से, जन्मे प्रभु पुरी सुसीमा में।।
गज चिह्न धरें श्री 'युगमंधर' तीर्थंकर समवसरण में हैं।
हम पूजें बहुविध भक्ति लिए, सबके ही लिये शरण वे हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीयुगमंधरजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जंबूद्वीप अपर विदेह, सीतोदा नदि के दक्षिण में।
वहाँ वीतशोक पुरि के राजा उन रानी से भगवन जन्मे।।
मृगचिह्न सहित 'श्रीबाहु' आप विहरण कर भविजन हरषाते।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके प्रभु धर्मामृत तुम बरसाते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीबाहुजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जंबूद्वीप अपर विदेह, सीतोदा नदि के उत्तर में।
है पुरी अवध्या के नरपति उनकी रानी से प्रभु जन्में।।
तीर्थेश 'सुबाहु' शत इंद्रों वंदित कपिचिह्न सहित राजें।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, सब रोग शोक दारिद भाजें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुबाहुजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य (चौपाई)-

पूर्वापर बत्तीस विदेह, चार तीर्थंकर नित विहरेय।
पूजूँ पूरण अर्घ्य चढ़ाय, सब दुख संकट जाँय पलाय।।1।।

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहु-सुबाहुतीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

-दोहा-

तीन लोक की संपदा, करें हस्तगत भव्य।
तुम गुण माला गायकें, पूरें सब कर्त्तव्य।।

चाल-हे दीनबंधु.....

जैवंत मुक्तिकांत देव देव हमारे।
जैवंत भक्तवृन्द भवोदधि से उबारे।।
हे नाथ ! आप जन्म से छह मास हि पहले।
धनराज रत्नवृष्टि करें मातु के महले।।1।।

माता की सेवा करतीं श्री आदि देवियाँ।
अद्भुत अपूर्व भक्ति करें सर्व देवियाँ।।
जब आप मात गर्भ में अवतार था धरा।
तब इन्द्र सपरिवार आय भक्ति से भरा।।2।।

प्रभु गर्भ कल्याणक महा उत्सव विधि किया।
माता पिता की भक्ति से पूजन विधि किया।।
हे नाथ ! आप जन्मते सुरलोक हिल उठा।
इन्द्रासनों के कम्प से आश्चर्य हो उठा।।3।।

इन्द्रों के मुकुट आप से हि आप झुक गये।
सुर कल्पवृक्ष हर्ष से हि फूल फल गये।।

वे सुरतरु स्वयमेव सुमन वृष्टि करे थे।
तब इन्द्र आप जन्म जान हर्ष भरे थे।।4।।

तत्काल इन्द्र सिंह पीठ से उतर पड़े।
प्रभु को प्रणाम करके बार-बार पग पड़े।।
भेरी बजा सब देव का आह्वान किया था।
जन्माभिषेक करने का उत्साह हुआ था।।5।।

सुरराज आ जिनराज को सुरशैल ले गये।
सुरगण असंख्य मिलके नाथ का न्हवन किये।।
जब आप थे विरक्त देव सर्व आ गये।
दीक्षा विधी उत्सव महामुद से मना गये।।6।।

जब घातिया को घात जान सूर्य प्रकाशा।
तब इन्द्र आ अद्भुत समवसरण वहाँ रचा।।
तुम दिव्य वच पियूष को पीते असंख्य जन।
क्रम से करें वे मुक्ति बल्लभा का तो वरण।।7।।

इस जंबूद्वीप के विदेह शाश्वते बत्तीस।
यदि हों अधिक तीर्थेश तो वे होवेंगे बत्तीस।।
वे पाँच या दो तीन भी कल्याणकों के ईश।
होते हैं ऐसा शास्त्र में वर्णन किया मुनीश।।8।।

हों कम से कम तो चार तीर्थंकर हमेश ही।
मैं नित्य नमन करूँ आप विद्यमान ही।।
हो शीघ्र दर्श आपका ये मेरी प्रार्थना।
तुम दिव्यध्वनि को सुनूँ बस एक याचना।।9।।

हे नाथ ! आप कीर्ति कोटि ग्रंथ गा रहे।
इस हेतु से ही भव्य आप शरण आ रहे।।
मैं आप शरण पाय के सचमुच कृतार्थ हूँ।
बस 'ज्ञानमति' पूर्ण होने तक ही दास हूँ।।10।।

–दोहा–

चार चतुष्टय के धनी, नमूँ चार तीर्थेश।
चारों गति के नाशने, चउ आराधन हेत।।11।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणसीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुतीर्थंकरेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो विहरमाण जिनेन्द्र चारों, का सदा अर्चन करें।
वे भव्य निज के ही गुणों का, नित्य संवर्द्धन करें।।
इस लोक के सुख भोगकर, फिर सर्व कल्याणक धरें।
स्वयमेव केवल 'ज्ञानमति' हो, मुक्ति लक्ष्मी वश करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र पूजा

-स्थापना-गीताछंद-

इस जंबूद्वीप विदेह में, बत्तिस विदेह कहावते।
उनमें निरंतर काल चौथा, ही रहे मुनि गावते।।
होते वहाँ पर तीर्थकर, केवलि मुनिगण सर्वदा।
उन सर्व को मैं पूजहूँ, आह्वान विधि करके मुदा।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-भुजंगप्रयात छंद

मुनी चित्त सम स्वच्छ जल को लिया है।
प्रभू पाद में तीन धारा किया है।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसा गंध कर्पूर मिश्रित किया है।
प्रभू चर्ण में चर्च समसुख लिया है।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयोराशि के फेन समश्वेत शाली।
धरूँ पुंज सन्मुख बनूँ भाग्यशाली।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा कंद की माल लेके।
चढ़ाऊँ तुम्हें स्वात्म सुख आश लेके।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जलेबी इमरती भरे थाल लाऊँ।
महातृप्तिकर आप चरणों चढ़ाऊँ।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की बाह्य का ध्वांत नाशे।
करूँ आरती ज्ञान की ज्योति भासे।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जले धूप अग्नी विषे गंध फैले।
जले कर्म वो जो सदा हैं विषैले।।

जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पनस आम अंगूर गुच्छे भले हैं।
तुम्हें अर्पते सत्फलों को फले है।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी मिला अर्घ्य चरणों चढ़ाऊँ।
निजात्मीक संपत्ति मैं शीघ्र पाऊँ।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि-सर्वसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लिया नीर प्रासुक करूँ शांतिधारा।
सदा शांति होवे मिले भव किनारा।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।10।।

शांतये शांतिधारा।

करूँ पुष्प अंजलि, जुही मोगरा ले।
भरूँ सौख्य संपति, जगत में निराले।।
जजूँ तीर्थकर आदि पद पंकजों को।
मिटाऊँ सभी जन्म के संकटों को।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(32 × 7 = 224 अर्घ्य)

–दोहा–

बत्तिस देश विदेह में, बत्तिस आरजखंड।
तीर्थंकर जिन मुनि सभी, जजूँ हरूँ भवफंद।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

कच्छा विदेह के आर्यखंड, में क्षेमा नगरी रजधानी।
उस शाश्वत कर्मभूमि में नित, तीर्थंकर होते शिवगामी।।
जो कालअनादि से अब तक,आगे भि अनंतों कालों तक।
हो चुके हो रहे होवेंगे, उन तीर्थकरों को पूजूँ नित।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे क्षेमानगर्यां भूतभविष्यत्वर्तमानत्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस नगरी में सामान्य केवली, जितने भी हो चुके वहाँ।
हो रहे तथा जो होवेंगे, शतइन्द्रों से भी वंद्य वहाँ।।
उनके दर्शन वंदन पूजन से, कर्मकालिमा धुलती है।
निजपरमानंद सुधारसमय आध्यात्मिक ज्योति खिलती है।।2।।

श्री ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसामान्यकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के गणधर अगणित,अब तक भि अनंतों मुक्ति गये।
जो वर्तमान हैं आगे भी, होवेंगे वे जगवंद्य हुये।।
सब गणधर सात ऋद्धिधारी, मनपर्यय ज्ञानी होते हैं।
उनको पूजूँ मैं अर्घ चढ़ा, वे भव भव का मल धोते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे क्षेमानगर्यां त्रैकालिकगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह सुअंग चौदह पूरब के, पाठी श्रुतकेवलि माने।
उस आर्यखंड में हुये हो रहे, होवेंगे मुनि परधाने।।
श्रुतज्ञान नेत्र से वे त्रिभुवन, अवलोकन करने वाले हैं।
उनकी पूजा हम नित्य करें, वे भवदुःख हरने वाले हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य उपाध्याय साधु तथा,ऋषिमुनियति औ अगनार कहे।
ये सर्व तपोधन त्रिभुवन में, वंदित दिक्अंबर धार रहे।।
इनमें बहुतेक ऋद्धिधारी, सामान्य मुनि भी जितने हैं।
उन सब त्रैकालिक को पूजूँ, उनको सुरगण भी प्रणमें हैं।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिक-आचार्योपाध्याय-सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के गर्भावतार जन्मोत्सव, तप औ ज्ञानभूमि।
निर्वाणभूमि ये पांच कल्याणक, की सब हैं पावनभूमि।।
सामान्यकेवली ऋषिमुनि की, तप ज्ञान तथा निर्वाणभूमि।
उन सबको पूजूँ अर्घ्य चढ़ा, हों जितनी वहाँ अतिशय भूमि।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थंकराणां पंचकल्याणकस्थलसामान्यकेवलिऋषिमुन्यादिकस्य तपोज्ञाननिर्वाणस्थल-अतिशयस्थलादिसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कच्छाविदेह के मध्य रजतगिरि,उसमें पहली कटनी पर।
दोनों भागों में इक सौ दस, विद्याधर नगर बने सुन्दर।।
उन सबमें सतत केवली मुनि,चारण ऋषिगण भी रहते हैं।
उन सबको पूजूँ अर्घ चढ़ा, वे निज पर शुद्धि करते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतप्रथमश्रेण्युभय-पार्श्वयोः दशोत्तरशतनगरीषु शाश्वतकर्मभूमिषु निरंतरविहरमाणत्रैकालिक-सर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश सुकच्छा आर्यखंड, मधि क्षेमपुरी नगरी जानो।
उसमें नित होते तीर्थंकर, वहाँ शाश्वत कर्मभूमि मानो।।
वे सब त्रैकालिक तीर्थंकर, जो कहे अनंतानंत वहाँ।
उन सबकी पूजा करने से, हो सब पापों का अंत यहाँ।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे क्षेमपुरीनगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस नगरी में सामान्य केवली, हुये हो रहे होवेंगे।
उन सबको वंदन करते ही, मेरे सब दुष्कृत धोवेंगे।।
इस भरतक्षेत्र के चारणऋषि, वहाँ पर जाकर दर्शन करते।
हम भक्ति-भाव से यहीं आज, पूजा करके संकट हरते।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वसामान्य-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के गणनायक भी, त्रैकालिक कहे अनंते भी।
उन सबको नमस्कार मेरा, मेरे दुःख का हो अंत अभी।।
इन गणधर की सुन दिव्यध्वनि, मुनिगण भी प्रमुदित होते हैं।
हम इनको अर्घ चढ़ाते ही, तन मन से पुलकित होते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतकेवलि अंगपूर्व धारी, ये वहाँ सदा ही होते हैं।
केवलि समान ये मुनिगण भी, सब त्रिभुवन को अवलोके हैं।
बस अंतर केवल इतना ही, इनका श्रुतज्ञान परोक्ष रहे।
केवलि प्रभु का प्रत्यक्ष रहे, इन श्रुतकेवलि को प्रणमन हो।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुत-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य उपाध्याय सर्व साधु, निज निजगुण से महिमाशाली।
ये वहाँ निरंतर होते हैं, शिवपथगामी गरिमाशाली।।

इनमें बहुऋद्धी युत मुनिगण, निर्ग्रंथ दिगम्बर साधूगण।
इन सर्व साधु को मैं पूजूँ, जितने भी त्रैकालिक यतिगण।।12।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गर्भजन्म तप ज्ञान और, निर्वाण कल्याणक भूमि कहीं।
सामान्य केवलि औ मुनिगण, इनसे भी पावन भूमि वहीं।।
जो अतिशय क्षेत्र अन्य कुछ भी, तीनों कालों के माने हैं।
उन सबको अर्घ चढ़ा करके, हम सर्व अमंगल हाने हैं।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वपंच-कल्याणकक्षेत्रअन्यपावनक्षेत्रअतिशयक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस देश सुकच्छा के मधि है, विजयार्द्ध उसी की कटनी पर।
दोनों भागों में विद्याधर की, इक सौ दस नगरी सुन्दर।।
उनमें केवलि श्रुतकेवलि औ, आकाशगमन वाले मुनिगण।
सामान्य साधुगण नित विचरें, उनकी पूजा सुख यशमंडन।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुकच्छादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य उभय-विद्याधरश्रेणीषु दशोत्तरशतैकनगरीणां त्रैकालिककेवलिसर्वसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है देश महाकच्छा विदेह, उस आर्यखंड के ठीक बीच।
विख्यात अरिष्टा नगरी में, तीर्थंकर होते जगत ईश।।
उन त्रयकालिक तीर्थंकर को, प्रणमूँ मैं भक्ति भाव पूर्वक।
निज आत्मानंद स्वभावी मुनि, उनको नित ध्याते रूचिपूर्वक।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अरिष्टानगर्यां त्रैका-लिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसमें सामान्य केवली भी, अगणित नित होते रहते हैं।
वे कर्म अरी को दूर भगा, निज की सुख संपत्ति वरते हैं।।

उनका रुचि से वंदन करते, निज केवल ज्ञान प्रगट होता।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, जिनभक्ति ही भवदधि नौका।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वसामान्य-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब तीर्थंकर के गणनायक, मनपर्यय ज्ञानी होते हैं।
ये दिव्यध्वनि को सुनकर के, भविजन संबोधित करते हैं।।
वे विघ्न निवारक मंगलकर, सब दुख दारिद को हरते हैं।
इनकी पूजा भक्ति करके, हम सर्व व्याधि को हरते हैं।।17।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश अंगों के पारंगत, श्रुतकेवलि महामुनी माने।
श्रुतज्ञान चक्षु से ये मुनिगण, सारे त्रिभुवन को पहिचानें।।
ये आत्म सुधारस आस्वादी, इनकी जो पूजा करते हैं।
वे आतम अनुभव रस पीकर, शिव रमणी को वश करते हैं।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुत-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी पाठक साधूगण सब, जिनकल्पी स्थविरकल्पी मुनि हैं।
ये वहाँ निरंतर होते हैं, निज आत्म तत्त्व के ज्ञानी हैं।।
इनके चरणों की भक्ति से, निजज्ञान सूर्य प्रकटित होगा।
रत्नत्रय की पूर्ति होगी, शिवपुर विश्राम तभी होगा।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वाचार्योपा-ध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के शुभ गर्भ जन्म, तप ज्ञान और निर्वाण पांच।
कल्याणक उत्सव इंद्र करें, उनसे पवित्र भू तीर्थराज।।
उन सब कल्याणक तिथियों की, कल्याणकभू तीर्थस्थल की।
मैं नितप्रति पूजा करता हूँ, मुझको मिल जावे सिद्धगति।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाकच्छादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे सर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस देश महाकच्छा के मधि, रजताचल की कटनी ऊपर।
इक सौ दश विद्याधर नगरी, उन सबमें विहरें साधु प्रवर।।
केवलि श्रुतकेवलि ऋद्धियुत, मुनिगण वहाँ संतत रहते हैं।
हम उनको अर्घ्य चढ़ा करके, बहु रोग शोक दुख हरते हैं।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहाकच्छादेशविदेहमध्यरजताचलस्य विद्याधरश्रेणीषु केवलिश्रुतकेवलिऋषिमुनियति-अनगारेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कच्छावति देश विदेह मध्य, आरजखंड बीच अरिष्टपुरी।
इस नगरी में हों तीर्थंकर, जो धर्मतीर्थ के हैं चक्री।।
उन भूतभावि औ वर्तमान, तीर्थंकर को वंदन करके।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, वे भक्तों को निजसम करते।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अरिष्टपुरीनगर्यां त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस नगरी में केवलज्ञानी, जितने भी संप्रति होते हैं।
हो चुके हैं तथा आगे होंगे, वे सब भवदधि के सेतु हैं।।
उन सब शिवगामी मुनियों को, उन गंधकुटी को नमस्कार।
हम उनको अर्घ चढ़ाते हैं, वे हमें करें भवसिंधु पार।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलि-भ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के गणधर अगणित, जो समवसरण के भूषण हैं।
जिन बिन दिव्यध्वनि नहीं खिरे, जो अतिशय गुण से पूरण हैं।।
उन सब त्रैकालिक गणनायक, गणधर परमेष्ठी को वंदूँ।
नित अर्घ चढ़ा करके प्रणमूँ, सब आधि व्याधि दुख को खंडूँ।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञानी सब श्रुत पारंगत, मुनिवर श्रुतकेवलि कहलाते।
ये निश्चित ही शिवगामी हैं, कतिपय भव से ही तर जाते।।

ऐसे श्रुतगामी को वंदन, मेरा श्रुतज्ञान विकास करो।
मैं भक्ति भाव से नित पूजूँ, मेरे भव दुख का नाश करो।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुत-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य उपाध्याय साधूगण, सब नग्न दिगबंर होते हैं।
ये अर्हन्मुद्रा के धारी, त्रिभुवन से पूजित होते हैं।।
इनके चरणों की पूजा से, निज में चारित्र प्रगट होता।
जो परमामृत से तृप्तीकर, सब द्रव्य भावमल को धोता।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वाचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के कल्याण पाँच, जो इंद्र मनाया करते हैं।
अगणित केवलियों से पावन, स्थान तीर्थ भी बनते हैं।।
ये तीर्थक्षेत्र सब भव्यों को, भवदधि से तारन हारे हैं।
हम सब उनको नित प्रति पूजें, वे पावन करने वाले हैं।।27।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे सर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कच्छावति के ठीक बीच, लंबा विजयार्ध गिरी सुन्दर।
उसकी पहली कटनी पर ही, इक सौ दश शाश्वत बने नगर।।
उनमें विद्याधर मनुज रहें, वे मुनिपद धर तप तपते हैं।
केवलि श्रुतकेवलि हो जाते, हम उन सबको नित यजते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकच्छकावतीदेशविदेहमध्यरजताचलस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिऋषिमुनियत्यनगारसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवर्ता देश विदेह कहा, उसमें आंरजखंड शाश्वत है।
उनके मधि है खड्गा नगरी में तीर्थंकर धर्मतीर्थ पति हैं।।

उन त्रयकालिक तीर्थंकर की, पूजा भक्ती अर्चा करते।
निज परमाह्लाद प्रगट होता, जिनके बल पूर्ण सुखी बनते।।29।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ–आवर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे खड्गानगर्यां त्रैकालिक–सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान प्रगट करते, भव्यों को मार्ग दिखाते हैं।
उनकी भक्ति से मुनिगण भी, निज में ही निज को ध्याते हैं।।
उन सब केवलीज्ञानी प्रभु की, हम अर्चा पूजा करते हैं।
निज आत्म तत्त्व को प्राप्त करें, बस यही प्रार्थना करते हैं।।30।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ–आवर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशगण के नायक गणधर, सब समवसरण में रहते हैं।
तीर्थंकर प्रभु के प्रमुख शिष्य, ये ऋद्धि समन्वित रहते हैं।।
इनकी पूजा सब विघ्नों का, संहार करे दुख नाश करे।
सब ऋद्धि सिद्धि नव निधि देकर, भक्तों की पूरी आश करे।।31।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ–आवर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर–चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतसिंधु पारंगत श्रुतज्ञानी , द्वादश अंगों के हैं ज्ञाता।
इनकी पूजा से भव्यजीव, निजपर के हों सम्यक ज्ञाता।
चारणऋद्धि से युत मुनिगण, वे भी इन मुनि को भजते हैं।
हम इनको अर्घ चढ़ा करके, निज आतम सुख को चखते हैं।।32।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ–आवर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविधसंघ के नेता सूरी, औ पढ़ें पढ़ावें उपाध्याय।
जो आत्म साधना में रत हैं, वे साधु कहाते स्वात्मध्याय।।
ये रत्नत्रयनिधि के स्वामी , हम इनकी अर्चा करते हैं।
मेरा रत्नत्रय पूर्ण करो, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।33।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ–आवर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिक-आचार्योपाध्यायसर्व–साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो पंच कल्याणक भूमि वहाँ पर, आर्यखंड में मानी हैं।
जो अन्य मुनिश्वर की तप ज्ञान, मोक्ष भूमि भी मानी हैं।।
उन सबकी पूजा करने से, मेरा मन निर्मल होवेगा।
निज में निज को पा जाने से, परमात्मा प्रगटित होवेगा।34।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ-आवर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे तीर्थंकर-अन्यमुनिआदि-कस्य त्रैकालिकतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्वता देश मध्य शोभे, विजयार्ध गिरी त्रयकटनीयुत।
पहली कटनी पर विद्याधर के, नगर बने हैं इक सौ दश।।
उनमें नित चौथा काल रहे, अतएव सदा मुनि रहते हैं।
केवलिश्रुतकेवलि मुनिगण को, हम नित प्रति वंदन करते हैं।।35।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ-आवर्तादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिककेवलिश्रुतकेवलिऋषिमुनियत्यनगारसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश लांगलावर्ता है, उसमें इक आर्यखंड उत्तम।
तीर्थंकर चक्री नारायण, प्रतिनारायण बलदेवोत्तम।।
ये पुरुष शलाका वहाँ नित्य, मंजूषा नगरी में होते।
जो धर्मतीर्थ के तीर्थंकर, उनको पूजें हम नत होके।।36।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थलांगलावर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे मंजूषानगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहाँ आर्यखंड में संतत ही, केवलज्ञानी भगवान बने।
उन सबकी गंधकुटी रचना, सुरगण करते प्रभु को प्रणमें।।
वे परमानंद अमृत पीकर, आत्मा को पूर्ण सुखी करते।
हम उनको अर्घ चढ़ा करके, पूजत ही निजसंपत्ति लभते।।37।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थलांगलावर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गणधर चौंसठ ऋद्धि धरें, चारों ज्ञानों के धारी हैं।
इन बिन नहिं द्वादशांग वाणी, जो भव्यों को कल्याणी है।।

उन गणधर गुरु को हम पूजें, वे भव्यों के रक्षक माने।
उनकी पूजा से सब सुख हो, सब मंगल हो यह सरधाने।।38।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थलांगलावर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-गणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूर्वों के ज्ञाता गुरु , श्रुतकेवलि अगणित होते हैं।
वे निज से निजमें निज को ही, ध्याध्याकर प्रमुदित होते हैं।।
उन आत्मरसास्वादी मुनि की, हम नितप्रति अर्चा करते हैं।
निज आत्मसुधारस मिल जावे, यह ही अभिलाषा करते हैं।।39।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थलांगलावर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुत-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनि यति औ अनगार भेद, निर्ग्रंथ साधु के माने हैं।
आचार्य उपाध्याय साधू से, इनमें ही भेद बखाने हैं।।
ये निज आत्मा के आराधक-साधक हैं सच्चे साधू हैं।
हम इनको पूजें अर्घ चढ़ा, ये निजसमतारस स्वादी हैं।।40।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थलांगलावर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके गर्भावतार आदि, कल्याणक पाँच कहे जाते।
वे तीर्थंकर निज पदरज से ही, भू पर्वत तीर्थ बना देते।।
अगणित मुनिगण भी तप करके, निर्वाण धाम को पाते हैं।
उनसे पवित्र सब क्षेत्रों को, हम रुचि से अर्घ चढ़ाते हैं।।41।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थलांगलावर्तादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरैः अन्यमुनिगणैश्चपवित्रतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस लांगलावर्ता देश बीच, विजयार्धगिरी त्रयकटनीयुत।
उसकी पहली कटनी पर है, विद्याधर नगरी इक सौ दस।।
वहाँ पर जो मुनिगण होते हैं, वे कर्म काट शिवपद पाते।
हम उनको अर्घ चढ़ा करके, पूजन करते अति हरषाते।।42।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थलांगलावर्तादेशविदेहमध्ये विजयार्धगिरिविद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिककेवलिश्रुतकेवलिसर्वसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कला देश सप्तम विदेह, उनमें जो आरजखंड रहे।
इस बीच औषधी नगरी है, उसमें तीर्थंकर सतत रहे।।
उनकी दिव्यध्वनि भव्यों को, नित मोक्ष मार्ग दिखलाती है।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, हमको वह राह दिखाती है।।43।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे औषधीनगर्यां त्रैकालिकसर्व-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस आर्यखण्ड में अगणित मुनि, केवलज्ञानी होते रहते।
वे निज भक्तों के सर्व पाप, निज दर्शन से धोते रहते।।
उन त्रैकालिक केवलियों की, हम नित प्रति अर्चा करते हैं।
हमको भी केवल ज्ञान मिले, नित यही भावना करते हैं।।44।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के बारहगण के, गणधर होते चारों ज्ञानी।
ये भविजन खेती को सींचें, सबको करते शिवपथगामी।।
हम सब गणधर गुरु को पूजें, वे हमको निज सम्पत्ति देवें।
सब रोग शोक दुख दारिद को, वे इक क्षण में ही हर लेवें।।45।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादशांगश्रुत के ज्ञानी, निज ज्ञान प्रदान करें सबको।
वे परमानन्दामृत पीते, वाणी से तृप्त करें सबको।।
उन श्रुत केवलियों की पूजा, भक्तों का ज्ञान बढ़ाती है।
जो पूजें उनके अशुभ कर्म, की होनहार टल जाती है।।46।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे सर्वत्रैकालिकश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य उपाध्याय सर्व साधु, रत्नत्रय निधि के स्वामी हैं।
भव्यों को शिक्षा दीक्षा दें, ये शिवपुर के अनुगामी हैं।।

इनके दर्शन वंदन करने, सुर असुर मनुजगण आते हैं।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, मेरा मन कमल खिलाते हैं।।47।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ तीर्थंकर के पंचकल्याणक, कुछ के होते दो तीन चार।
सामान्य केवली मुनियों के, होते रहते नित प्रति विहार।।
इन सबकी रज से पावन भू, बस तीर्थ क्षेत्र बन जाती है।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, भविजन मन शुद्ध बनाती है।।48।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे तीर्थंकरसामान्यकेवलिअन्यमुनिआदिकस्यतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कलादेश के ठीक मध्य, लम्बा रजताचल शोभ रहा।
इस पर विद्याधर नगर बनें, उनमें जिनधर्म प्रवर्त्त रहा।।
केवलिश्रुतकेवलि महामुनि , नित प्रति वहां होते रहते हैं।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, मेरे भव दुःख को दहते हैं।।49।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिककेवलिश्रुतकेवलिसर्वसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्कलावती अष्टमविदेह, इसमें छः खण्ड कहे जाते।
है आर्य खण्ड में पुंडरीकणी, नगरी उसमें सुर आते।।
इसमें अतीत औ भाविकाल, के तीर्थंकर अनन्त माने।
श्री सीमन्धर प्रभु वर्तमान, इन सबकी हम पूजा ठाने।।50।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे पुण्डरीकिणीनगर्यां त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामान्य केवली सदा यहाँ, अगणित होते ही रहते हैं
भविजन को उपदेशामृत से, नितप्रति सन्तर्पित करते हैं।।

निजआतम अनुभव पाने को, हम उनकी पूजा करते हैं।
जो भविजन पूजा भक्ति करें, वे भवसागर से तरते हैं।।51।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे सर्वत्रैकालिककेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के अगणित गणधर, सब ऋद्धी के स्वामी होते।
भक्तों के विघ्न विनाशक ये, जग के अंतयार्मी होते।।
इन गणधर गुरु के चरणों की, जो पूजा अर्चा करते हैं।
वे सर्वामङ्गल दूर भगा, निज सुख सम्पति को भरते हैं।।52।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो श्रुत सागर के पारङ्गत, वे श्रुत केवली कहाते हैं।
वे निज वाणीमय किरणों से, नित भव्य कमल विकसाते हैं।।
उनकी पूजा करने से ही, सब ईतिभिति आपत्ति टले।
हम पूजें अर्घ चढ़ाकरके, तब निज की सुख सम्पत्ति मिले।।53।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुत-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य उपाध्याय सर्व साधु, उन शाश्वत कर्मभूमियों में।
निज आत्म साधना करते हैं, पर को नितप्रति संबोधें वे।।
नित समतारस के आस्वादी, उपसर्ग परीषह सहन करें।
हम उनको प्रणमें बार-बार, वे मेरा भी दुःखहरण करें।।54।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के चरणों की रज, पृथ्वी पर्वत को तीर्थ करे।
सामान्यकेवली और साधु, वे भी पृथ्वी को तीर्थ करे।।
उन पंचकल्याणक तीर्थ क्षेत्र, औ अन्य तीर्थ क्षेत्रों को भी।
हम पूजें अर्घ चढ़ाकर के , मेरे संकट हो दूर सभी।।55।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-तीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस देश पुष्कलावती मध्य, रजताचल चाँदी का सुन्दर।
इसकी कटनी पर विद्याधर, सर्वत्र विचरते हैं सुखकर।।
उन कर्मभूमि में सतत केवली, साधूगण होते रहते।
हम उनकी पूजा करते हैं, वे सुरनर से वन्दित रहते।।56।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपुष्कलावतीदेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोलाछंद–

वत्सादेश विदेह, आर्य खण्ड है उसमें।
पुरी सुसीमा एक, रजधानी है उसमें।।
भूत भविष्यतकाल, के अनन्त तीर्थंकर।
युगमंधर भगवान, विचरें अभी वहाँ पर।।57।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे सुसीमानगर्यां त्रैकालिकसर्व–तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी ईश, वहाँ अनन्ते होते।
कर्मअरी को नाश, सौख्य अनंते भोगें।।
उनकी पूजा भक्ति, भव समुद्र से तारे।
हम पूजें इत आज, मेरे कर्म विदारे।।58।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणधर गुरुदेव, रहते समवशरण में।
निज भक्तों के ख्यात, विघ्न विनाशक जग में।।
अर्घ चढ़ाकर आज, हम उन गुरु को पूजें।
मिटे सर्व संताप, कर्मअरी भी धूजें।।59।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशाङ्ग श्रुत ज्ञान, पूर्ण भरा है घट में।
श्रुत केवलि भगवान, उनको हम नित प्रणमें।

उनकी पूजा भक्ति, स्वपर ज्ञान विस्तारें।
शरणागत को शीघ्र, भवसमुद्र से तारें।।60।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरीपाठक साधु, वहाँ विहार करें नित।
जो जन भव से भीत, वे होते उन आश्रित।।
मन वच तन से शुद्ध, हम उन सबको प्रणमें।
करो कृपा गुरुदेव, सदा रहूँ तुम शरणें।।61।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक क्षेत्र, तीरथ क्षेत्र वहाँ पर।
अतिशय गुण से ख्यात, बहुते क्षेत्र वहाँ पर।।
उन सबको मैं नित्य, अर्घ चढ़ाऊँ रुचि से।
करो भवोदधि पार, तीर्थ मुझे निजरज से।।62।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सादेशविदेह, उसके मधि विजयारध।
विद्याधर के देश, उसमें हैं इकसौदस।।
वहाँ केवली वृन्द, साधूगण नित रहते।
उनको पूजूँ नित्य, वे सब दुख को हरते।।63।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवत्सारम्य, आर्यखण्ड उसमें हैं।
पुरी कुण्डला एक, तीर्थंकर उसमें हैं।।
त्रैकालिक तीर्थेश, उन सबको मैं पूजूँ।।
आत्म सुधारस पाय, भव-भव दुःख से छूटूँ।।64।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे कुण्डलानगर्यां त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित मुनिवरवृंद, केवल ज्ञान प्रकाशे।
गंधकुटी के मध्य, अन्तरिक्ष से राजे।।
इन्द्रादिक से वंद्य, भवसमुद्र तरते हैं।
हम भी पूजें नित्य, वे मुझ दुख हरते हैं।।65।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के पास, गणधर देव विराजें।
करें देशना नित्य, भविमन कमल विकासें।।
उनकी पूजा भक्ति, जो जन रुचि से करते।
समता रस को पाय शीघ्र भवोदधि तरते।।66।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत केवलि भगवान, निजानंद रसस्वादि।
होते भक्त महान, जो उनके चरणाश्रित।।
मैं भी भक्ति बढ़ाय, अर्घ चढ़ाकर पूजूँ।
करो विघ्न सब नाश, पुनर्जन्म से छूटूँ।।67।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि उपाध्याय साधु, नग्न दिगम्बर मुनि हैं।
रागादिक से दूर, इन्द्रों से वंदित हैं।।
इनका वंदन नित्य, सर्व दुखों को चूरे।
भव्य जनों के नित्य, सर्व मनोरथ पूरे।।68।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक क्षेत्र, तीरथ क्षेत्र अनेकों।
पुण्य पुरुष के पाद, रज से पावन हैं वो।।

उन सबको मैं नित्य, अर्घ चढ़ाकर पूजूँ।
करो हमें भवतीर, जन्ममरण से छूटूँ।।69।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवत्सा मध्य, रजत गिरी चाँदी का।
विद्याधर के देश, कर्मभूमि वहाँ नीका।।
केवल ज्ञानी और, अगणित साधु वहाँ पर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, तिरूँ शीघ्र भवसागर।।70।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवत्सादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावत्सा शुभदेश, उसके आरजखंड में।
अपराजिता प्रसिद्ध, नगरी है उस मधि में।।
तीर्थंकर भगवान, जन्म वहीं पर लेते।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, वे सुख सम्पत्ति देते।।71।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अपराजितानगर्यां त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस आरजखंड माहिं, बहुत केवली रहते।
आत्म सुधारस मग्न, भव भव दुख को दहते।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, मुझे आत्मनिधि दीजे।
भवभव क्लेश मिटाय, प्रभु निज सम कर लीजे।।72।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणधर गुरुदेव, रहते समवसरण में।
वंदे श्रीजिनदेव, रहते उन चरणन में।।

उन गणधर को नित्य, सुर नरगण मिल पूजें।
मैं भी पूजूँ नित्य, जन्म मरण दुख छूटें।।73।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभूमि वहाँ नित्य, श्रुतकेवलि मुनि रहते।
ईति भीति पर चक्र, दोष नहीं वहाँ रहते।।
शास्त्र ज्ञान फल पाय, कर्मकलंक मिटाते।
उन को अर्घ्य चढ़ाय, नमूँ नमूँ गुण गाके।।74।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी पाठक साधु उत्तमचारित पालें।
आत्मतत्त्व को ध्याय, राग द्वेष को टालें।।
उनको पूजें नित्य, चक्रवर्ति सुरपति भी।।
हम भी पूजें नित्य, मिले आत्मनिधि निज की।।75।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक क्षेत्र, दोय तीन कल्याणक।
अन्य मुनि के क्षेत्र, तपो ज्ञान शिवसाधक।।
ये सब तीर्थ महान् , उनको पूजूँ रुचि से।
तीन रत्न गुणवान, बनूँ इसी ही विधी से।।76।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावत्सादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावत्सा के मध्य रजताचल चाँदीमय।
विद्याधर के देश , इक सौ दश संपतिमय।।
इनमें जो मुनिनाथ, केवलि श्रुतकेवलि हैं।
उनको जजूँ त्रिकाल, आतमनिधि मुझ ही है।।77।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावत्सादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सावती विदेह उसके आरजखंड में।
तीर्थंकर नित होय नगरी प्रभंकरा में।।
परमानंद निकेत प्राप्त करें निजबल से।
पूजूँ भक्ति समेत छूटूँ भवभव दुःख से।।78।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे प्रभंकरानगर्यां त्रैकालिकसर्व-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगणित मुनिगण नित्य, रत्नत्रय के बल से।
केवल ज्ञान को पाय, बसे मोक्षपुर जाके।।
उनको अर्घ्य चढ़ाय, रत्नत्रय निधि पाऊँ।
कर्मकलंक मिटाय, केवल ज्ञान उपाऊँ।।79।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारहगण के नाथ गणधर देव कहाते।
तीर्थंकर के पास, समवशरण में राजे।।
मनवचकाय लगाय उनको अर्घ्य चढ़ाऊँ।
जन्म मरण दुख नाश, फेर न भव में आऊँ।।80।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग वारिधि, में अवगाहन करते।
श्रुतकेवलि भगवान् , भक्तों के दुख हरते।।
उनकी पूजा भक्ति, सम्यग्ज्ञान प्रकाशे।
वे मुनिगण के नित्य, चित्तकमल विकसाते।।81।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी पाठक साधु, जिनकल्पी मुनि होते।
करते संघ में वास, स्थविरकल्पि मुनि होते।।

मन वच तन से शुद्ध, उनको नित्य जजूँ मैं।
करूँ निजातम शुद्ध, समरस सौख्य चखूँ मैं।।82।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक क्षेत्र, अतिशयक्षेत्र वहाँ पर।
जो पूजें जन नित्य, वसुविध अर्घ्य चढ़ाकर।।
पावन क्षेत्र महान, इन रज शीश चढ़ावें।
मिटे जगत् का क्लेश, फेर न भव में आवें।।83।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सावती विदेह, मध्य रजतगिरि सोहै।
विद्याधर के देश से सुरनर मन मोहै।
केवलि जिन भगवान् अगणित साधु वहाँ पर।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय मिले न फेर भवान्तर।।84।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवत्सावतीदेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्यादेश विदेह, आर्यखण्ड है उसमें।
अंकानगरी नित्य, तीर्थंकर हो उसमें।।
भूत भविष्यत् और वर्तमान तीर्थंकर।
उनको अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ सौख्य हितंकर।।85।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अंकानगर्याम् त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यहाँ असंख्ये साधु केवलज्ञानी होते।
भावकर्म अरु द्रव्य कर्ममलों को धोते।।

उनकी पूजा भक्ति, निज पर ज्ञान प्रकाशे।
जिसके बल से भव्य, केवलज्ञान विकासे।।86।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के शिष्य, गणधर देव प्रमुख हैं।
दिव्यध्वनी को नित्य, दो नय से वर्णत हैं।।
निश्चय औ व्यवहार, द्वय रत्नत्रयधारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, वे जग मंगलकारी।।87।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत पारंगत साधु, स्याद्वाद किरणों से।
मिथ्यामत को नाश, सम्यग्ज्ञान प्रबोधें।।
इनका ज्ञान परोक्ष, भी त्रिभुवन को जाने।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, सर्व अमंगल हाने।।88।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु सरागी और, वीतरागी कहलाते।
सूरी पाठक नित्य, शिष्यों को समझाते।।
राग प्रशस्त समेत, मोक्ष मार्ग विकसाते।
बोधि पूरण हेतु, गुरु को अर्घ चढ़ाते।।89।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्याय–साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्या आरजखंड, पंचकल्याणक भूमी।
अगणित हों मुनिवृंद, उनसे पावन भूमी।।
भवसागर से भव्य जन को पार उतारें।
इनको पूजूँ नित्य, तीर्थनाम यह धारें।।90।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्या देश के मध्य, गिरि विजयार्ध कहाता।
विद्याधर के देश, उनमें बहुविध साता।।
मुनिगण होते नित्य, केवलज्ञानी ध्यानी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, बनूँ स्वपर विज्ञानी।।91।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरम्यादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या रम्य, आर्यखंड उसमें है।
तीर्थंकर से युक्त पद्मावति नगरी है।।
जगवंदित तीर्थेश, तीन काल वहाँ होते।
पूजूँ जगपरमेश, मेरे मन को शोधें।।92।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे पद्मावतीनगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस आरजखंड माहिं मुनि केवली अनंते।
निज पुरुषार्थ बलेन, कर्म अरी को खंडे।।
उनकी वंदन भक्ति, हमें सौख्य संपत्तिकर।
जो पूजें धर प्रीति, उनके सब संकटहर।।93।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थनाथ के शिष्य, गणधर देव अनंते।
हों उस आरजखंड में त्रिकाल गुणवंते।।
उन गुणधर गणईश की पूजा गुणकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, वे होवें सुखकारी।।94।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतकेवलि भगवान्, ज्ञान चक्षु के धारी
रत्नत्रय से मान्य, रोग शोक दुखहारी।।

मम रत्नत्रय पूर्ण, करो यही इक इच्छा।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, करूँ ज्ञान प्रत्यक्षा।।95।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाजात जिनरूप, धरें सदा सब मुनिवर।
ध्याते शुद्धस्वरूप, गुणगण मंडित गुरुवर।।
सूरीपाठक साधु, त्रिविध गुणो से त्रयविध।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, मिले चरित तेरह विध।।96।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या माहिं, आरजखंड कहाता।
शाश्वत चौथा काल, स्वर्ग मोक्ष पथ दाता।।
तीर्थंकर से ख्यात, पाँच कल्याणक भूमि।
अन्य तीर्थ भी पूज, मिले आठवीं भूमि।।97।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुरम्यादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या मध्य, रजताचल कटनीयुत।
विद्याधर के देश, इक सौ दश सुख संयुत।।
वहाँ रहें मुनिनाथ, केवलि श्रुतकेवलि भी।
पूजूँ शीश नवाय, मिले निजातम निधि भी।।98।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुरम्यादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया शुभदेश, नगरी शुभा वहाँ पर।
तीर्थंकर परमेश, होते रहते सुखकर।।

असि मषि आदिक षट्, कर्मों की वह भूमी।
तीर्थंकर को पूज, मिले हमें शिवभूमी।।99।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरमणीयादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे शुभानगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहाँ असंख्ये साधु, केवल ज्ञान प्रकाशें।
निजवाणी से नित्य, मिथ्यातम को नाशें।।
ज्ञानपूर्ति के हेतु, उनको अर्घ चढ़ाऊँ।
स्वपर भेद विज्ञान, पाकर निजपद पाऊँ।।100।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरमणीयादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणधर गणधर देव, सर्वगुणों के दाता।
ऋद्धि सिद्धि से पूर्ण, सुखसंपत्ति विधाता।।
तीर्थंकर के शिष्य, दिव्यध्वनि विस्तारें।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, हमें शीघ्र ही तारें।।101।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरमणीयादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूर्व महान, ज्ञान धरें श्रुतज्ञानी।
अगणित गुण की खान, शुद्धातम के ध्यानी।।
धर्मध्यान के हेतु, इनकी पूजा वरणी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, मिले भवोदधि तरणी।।102।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरमणीयादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मुद्राधार, सर्वगुणों को पालें।
सूरी पाठक साधु, निज के कर्म प्रजालें।।
दीक्षा शिक्षा दान, करते द्विविध मुनि हैं।
साधु साधना लीन, जजूँ उन्हें सुखप्रद वें।।103।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरमणीयादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्याय-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक तीर्थ, तीर्थंकर के होते।
अन्य तीर्थ भी नित्य, मुनिगण से बन जाते।।
निजमन पावन हेतु, पावन तीर्थ जजूँ मैं।
वे भवि के भवसेतु, उन रज शीश धरूँ मैं।।104।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरमणीयादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया के मध्य, विजयारध गिरि सुदंर।
विद्याधर आवास, इस पर बनें निरंतर।।
उनमें मुनिगण नित्य, आत्म साधना करते।
सबको पूजूँ नित्य, ये सब भवदुख हरते।।105।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थरमणीयादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधर-श्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश मंगलावति में, आर्यखंड मधि नगरी।
रत्नसंचया नाम, तीर्थंकर गुण लहरी।।
त्रयकालिक तीर्थेश, इस नगरी में माने।
पूज हरूँ भवक्लेश, सुख पाऊँ मनमाने।।106।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमंगलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे रत्नसंचयानगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस आरजखंड माहिं, अगणित केवलज्ञानी।
होते हैं त्रयकाल, जग के अंतर्यामी।।
इनकी पूजा भक्ति, सब अज्ञान विनाशे।
जो पूजें धर प्रीति, ज्ञान ज्योति परकाशे।।107।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमंगलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणनायक गुरुदेव, विघ्न विनाशक ख्याता।
सब ऋद्धि समवेत, नवनिधि सिद्धि विधाता।।

हम पूजें नत शीश, सर्व अमंगल चूरें।
अशुभ कर्म को नाश, सर्व मनोरथ पूरें।।108।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमंगलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत पारंगत साधु, केवल ज्ञानी सम हैं।
श्रुतकेवली प्रसिद्ध, सब जग अवलोकत हैं।।
इनका ज्ञान परोक्ष, फिर भी मुक्ति प्रदाता।
वंदूँ शीश नवाय, धर्म शुक्ल के ध्याता।।109।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमंगलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिगणत्रिविध महान् , भविजन शिवपथदर्शक।
रत्नत्रय निधिमान, भव्यकमल के हर्षक।।
निज आतम को शुद्ध, करें करावें संतत।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, करो हमें स्वातमरत।।110।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमंगलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के पाँच, कल्याणक से पावन।
अन्य साधुगण नित्य, जहाँ करते निज साधन।।
वे सब तीर्थ प्रसिद्ध, आत्म शुद्धि में साधक।
उनको पूजूँ नित्य, वे हैं पाप विनाशक।।111।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमंगलावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलावति के मध्य, रजताचल मनहारी।
विद्याधर के देश, शोभ रहें सुखकारी।।
केवलज्ञानी साधु, श्रुतज्ञानी सब विचरें।
पूजूँ भक्ति समेत, सर्वकाल जो विहरें।।112।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमंगलावतीदेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधर-श्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

पद्मा देश विदेह में, आर्यखण्ड के मध्य।
अश्वपुरी में तीर्थकर, उन्हें नमूँ जग वंद्य।।113।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अश्वपुरीनगर्यां त्रैकालिकसर्व-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्यखण्ड में नित्य ही, केवलज्ञानी होय।
उनकी पूजा भक्ति से, भव भव में सुख होय।।114।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर सब तीर्थेश के, करें देशना नित्य।
उनको पूजूँ अर्घ्य ले, मिले आत्मसुख नित्य।।115।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग श्रुत के धनी, श्रुतकेवली विख्यात।
उनकी पूजा नितकरूँ, मिले स्वात्म साम्राज्य।।116।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी पाठक साधुगण, नितप्रति करें विहार।
उनको पूजें भक्ति से, हो मम आत्म सुधार।।117।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्याय-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक क्षेत्र बहु, अन्य और भी तीर्थ।
उन सबकी पूजा करूँ, मम आत्मा हो तीर्थ।।118।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मा देश विदेह के, मध्य रजतगिरि रम्य।
विद्याधर के केवली, मुनिगण जजूँ प्रसन्न।।119।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुपद्मा खंड षट् , आरजखंड के मध्य।
सिंहपुरी में तीर्थंकर, सतत रहे जग वंद्य।।120।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे सिंहपुरीनगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही आरजखंड में, केवलज्ञानी नंत।
उन सबकी पूजा करूँ, मिटे जगत का फंद।।121।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के निकट में, गणधर गुरु राजंत।
उन सब की पूजा करूँ, हो सब दुख का अंत।।122।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह विद्या में कुशल, सर्वज्ञान के ईश।
श्रुतकेवलि को नित जजूँ, कर अंजलि नत शीश।।123।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत पालते, पंचमगति की आश।
त्रिविध साधु को पूजते, मिले आत्म गुणराशि।।124।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्याय-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक से तथा, निर्वाणादिक क्षेत्र।
उन सबको पूजूँ सदा, खुले ज्ञान के नेत्र।।125।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुपद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुपद्मा बीच में, रजताचल पर नित्य।
विद्याधर पुर में नमूँ, केवलि साधु प्रसिद्ध।।126।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुपद्मादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महापद्मा वहाँ, आर्यखंड के बीच
महापुरी में तीर्थकर, जजत धुले भवकीच।।127।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहापद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे महापुरीनगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसके आरजखंड में, केवलज्ञानी ईश।
नित्य विहरते मैं उन्हें, जजूँ नमाकर शीश।।128।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहापद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश गण के गणपति, विघ्न विनायक नाम।
उन सबको में नित जजूँ, झुक झुक करूँ प्रणाम।।129।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहापद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत केवलि प्रसाद से, सब जग में हो क्षेम।
आत्मशुद्धि हित नित जजूँ, हो स्वधर्म से प्रेम।।130।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहापद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपाध्याय शिक्षित करें, दीक्षा दें आचार्य।
साधु स्वात्मसाधन निरत, पूजूँ अर्घ चढ़ाय।।131।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहापद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणक पावन धरा, निर्वाणादिक पवित्र।
उन सब तीर्थों को जजूँ , मन हो शीघ्र पवित्र।।132।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहापद्मादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महापद्मा मधी, रजताचल पर नित्य।
विद्याधर पुर में मुनी, केवलि जग स्तुत्य।।133।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहापद्मादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पद्मकावति वहां, आर्यखंड के मध्य।
विजयपुरी में तीर्थकर, उन्हें जजूँ शिरनम्य।।134।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे विजयपुरीनगर्यां त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस ही आरजखंड में, केवलज्ञानी नाथ।
नित विहरें उनको नमूँ, सदा नमाकर माथ।135।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानंद पियूष से, तृप्त सदैव प्रसन्न।
गणधर गुरु को नित जजूँ, मुझ मन करें प्रसन्न।।136।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विघ्नघन चूरते, भव्य सस्य हित मेघ।
श्रुतकेवलि मुनि को जजूँ, वे भवदधि के सेतु।।137।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुत-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकल्पी मुनि जिन सदृश, स्थविरकल्पि मुनि संघ।
सूरी पाठक साधु को, जजूँ मिटे भव द्वन्द।।138।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापुरुष पद धूलि से,पावन तीर्थ प्रसिद्ध।
उन सबको नित पूजते, मम आत्मा हो सिद्ध।।139।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पद्मकावति विषें, विजयारध विख्यात।
विद्याधर पुर में जजूँ, केवलि मुनि गण ख्यात।।140।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थपद्मकावतीदेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधर-श्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखा देश विदेह में, आर्यखंड के बीच।
अरजानगरी में जजूँ, तीर्थंकर नतशीश।।141।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशंखादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अरजानगर्यां त्रैकालिकसर्व-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण विनाश कर, केवलज्ञानी सिद्ध।
उन सबकी पूजा करूँ, मिले सिद्धि नवनिद्ध।।142।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशंखादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणधर गणधर चरण की, शरण लिया में अद्य।
जजूँ अर्घ ले तुम चरण, पूर्ण करूँ श्रुत सर्व।।143।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशंखादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अष्टांग निमित्त में, कुशल सर्वश्रुत पूर्ण।
उन श्रुतकेवलि को जजूँ, करूँ कर्म अरि चूर्ण।।144।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशंखादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध संघ के अधिपती, सूरि सर्व जग वंद्य।
पाठक साधु भी जजूँ, करूँ जन्म निज धन्य।।145।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशंखादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पदपद्म से, भू पर्वत भी तीर्थ।
अन्य साधु से भी बनें, उन्हें जजूँ नतशीश।।146।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशंखादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखा देश विदेह मधि, रजतगिरी अति श्वेत
विद्याधरपुर में जजूँ, केवलि साधु समेत।।147।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थशंखादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनी देश विदेह में, आर्यखंड के बीच।
विरजा नगरी में जजूँ, तीर्थंकर जग ईश।।148।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनलिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे विरजानगर्यां त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्यखंड में केवली, विचरण करें सदैव।
उन सबकी पूजा करूँ, बनूँ सिद्ध स्वयमेव।।149।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनलिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर देव महान हैं, कहें तत्त्व विस्तार।
उनके चरणों को जजूँ , मिले तत्त्व का सार।।150।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनलिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्व श्रुत के धनी, पढ़े पढ़ावें नित्य।
उन श्रुतकेवलि को जजूँ, धरूँ धर्म में प्रीति।।151।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनलिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अट्ठाइस गुण मूलधर, नग्न दिगंबर देव।
सूरि पाठक साधु त्रय, इन्हें जजूँ धर नेह।।152।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनलिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पुरुष के गर्भ जनि, तपो ज्ञान निर्वाण।
इन निमित्त से तीर्थ जो , उन्हें जजूँ बहुमान।।153।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनलिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनी देश विदेह मधि, रजताचल पर खास।
विद्याधरपुर के जजूँ, केवलि साधु समाज।।154।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थनलिनीदेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुदा देश विदेह के, आर्यखंड में नित्य।
पुरी अशोका में जजूँ ,तीर्थंकर सब सिद्ध।।155।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकुमुदादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्यखंड में केवली, होते सतत अनंत।
उन सबकी पूजा करूँ, रोग शोक दुख अंत।।156।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकुमुदादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर मुनिगण अमित हैं, निजआतम रसलीन।
उनको अर्घ चढ़ाय के, करूँ कर्म रस छीन।।157।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकुमुदादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम रस अनुभवें, श्रुतकेवली मुनीश।
उनके पद पंकज जजूँ, कर अंजलि नतशीश।।158।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकुमुदादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा शिक्षा में कुशल, सूरि पाठक देव।
ध्यान साधना साधु की, करूँ त्रिविध गुरु सेव।।159।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकुमुदादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्याय–साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक तीर्थ औ, अन्य तीर्थ जो होय।
उन सबकी पूजा करूँ, स्वात्म शुद्धि मम होय।।160।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकुमुदादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुदा देश विदेह में, रजताचल शुचिवर्ण।
वहाँ केवली साधुगण, जजूँ नित्य उन चर्ण।।161।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थकुमुदादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता देश विदेह में, आर्यखंड विख्यात।
वीतशोक नगरी वहां, बाहुजिन हैं आज।।
भूत भविष्यत्काल के, तीर्थंकर हैं नंत।
सब के चरण सरोज को, पूजत हो भव अंत।।162।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसरितादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे वीतशोकानगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस ही आरजखंड में, केवलिनाथ अनंत।
उन सबके चरणों नमूँ, हो मम सौख्य अनंत।।163।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसरितादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यंत्र मंत्र औषधि निमित्त, सर्वशास्त्र में दक्ष।
गणधरगुरु को नित नमूँ, मम आत्मा हो स्वच्छ।।164।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसरितादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्व सब शास्त्र को, पढ़े पढ़ावें नित्य।
उन श्रुत केवलि को जजूँ, उनके पद आश्रित्य।।165।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसरितादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी पाठक साधुगण, नित विहरें उस माहिं।
उन सबके पदकंज को, नमूँ नमूँ शिर नाय।।166।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसरितादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्याय-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर पद धूलि से, तीर्थ बनें जग पूज्य।
अन्य और भी तीर्थ को, जजूँ सुरासुरपूज्य।।167।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसरितादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता देश विदेह में, विजयारध रजताभ।
विद्याधर के नगर में, जजूँ सर्व मुनिराज।।168।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसरितादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिक-सर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चौपाई-

वप्रादेश विदेह महान् , उसमें आर्यखंड सुखदान।
विजयानगरी में तीर्थेश, पूजन करत हरूँ भव क्लेश।।169।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे विजयानगर्यां त्रैकालिकसर्व-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सतत केवली विहरें वहाँ, गंधकुटी में राजें तहाँ।
आत्म सुधारस चखने हेतु, पूजूँ उन्हें भवोदधि सेतु।।170।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के शिष्य प्रधान, गणधर देव सर्वगुण खान।
ऋद्धि सिद्धि चउज्ञान समेत, जजूँ उन्हें निजशुद्धी हेत।।171।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर व्यंजन भौमादिनिमित्त, सर्वशास्त्र में कुशल प्रसिद्ध।
उन श्रुतकेवलि को नित जजूँ, पुनर्जन्म के दुख से बचूँ।।।172।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउसंघ के नायक आचार्य, शिष्य पढ़ावें गुरु उपध्याय।
आत्मसाधना में रत साधु, उनको जजूँ हरूँ सब व्याधि।।173।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वआचार्योपाध्याय-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के पंच कल्याण, अन्य मुनी के तप निर्वाण।
इनसे पावन तीर्थ प्रसिद्ध, नित्य जजूँ पाऊँ निज सिद्धि।।174।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वप्रादेश विदेहनि मध्य, रजताचल विद्याधर संग।
उनमें केवलि और मुनींद्र, उन्हें जजत होऊँ भवतीर्ण।।175।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवप्रा कहा विदेह, उनके आर्यखंड में येह।
नगरी वैजयंति सुखदान, तीर्थंकर पद जजूँ महान।।176।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे वैजयंतीनगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाख्यात चारित्र समेत, केवलज्ञानी जग हित हेत।
पंचम चारित प्राप्ती हेतु, पूजूँ उन्हें भवोदधि सेतु।।177।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारहगण नायक यति ईश, धर्मध्यान में अतिशय प्रीति।
गणधर गुरु को जजूँ त्रिकाल, मनवचतन त्रययोग संभाल।।178।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथाजात मुद्राधर यती, पिछी कमंडलु श्रुत में रती।
श्रुतकेवलि मुनिगण त्रयकाल, नमूँ नमूँ नाऊँ निज भाल।।179।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण छत्तिस पचीस अठवीस, धारण करते महामुनीश।
सूरि उपाध्याय साधु महान्, सबको जजूँ सौख्य प्रदजान।।180।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक भूमि पवित्र, अन्य तीर्थ भी जगत् पवित्र।
वे सब तीर्थ जजूँ मन लाय, मन विशुद्धि का यही उपाय।।181।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवप्रा मधि विजयार्ध, विद्याधर नगरी विख्यात।
वहाँ केवली श्रुतधर साधु, नित्य विचरते पूजूँ आज।।182।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुवप्रादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महावप्रा के मध्य, आर्यखंड में नगरी भव्य।
नाम जयंती में तीर्थेश, त्रयकालिक को नमूँ हमेश।।183।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे जयंतीनगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्यखंड में नित विहरंत, केवलज्ञानी श्रीभगवंत।
ज्ञान ज्योति प्रगटावन हेतु, नित प्रति जजूँ हरूँ भवखेद।।184।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण मे रहें गणींद्र, नमें उन्हें शत इन्द्र मुनीन्द्र।
ऋद्धि सिद्धि संपति दातार, जजूँ उन्हें गुणवृंद अपार।।185।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत समुद्र पारंगत नाथ, श्रुतकेवलि निजज्ञान सनाथ।
श्रुतफल अच्युतपद के हेतु, जजूँ उन्हें वे सब दुख देत।।186।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामायिक चारित्र धरंत, सूरि पाठक साधु महंत।
इन सबको पूजूँ धर प्रीत, ये सबके हि अकारण मीत।।187।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योंपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पुरुष पदरज से पूत, पावन तीर्थ धर्म अनुस्यूत।
उन्हें जजूँ निजशुद्धी हेत, वे सबको समकित निधि देत।।188।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावप्रादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महावप्रा के बीच, रजताचल विद्याधर मीत।
वहाँ केवली साधु मुनीन्द्र, उन्हें नमूँ वे परम पवित्र।।189।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थमहावप्रादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वप्रकावती विदेह, आर्यखंड के बीच वसेय।
अपराजिता नगरि में नित्य, तीर्थंकर हो पूजूँ नित्य।।190।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अपराजितानगर्यां त्रैकालिकसर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रियज्ञान शून्य भगवान, त्रिभुवनव्यापी ज्ञान निधान।
सर्व केवली गुणगण ईश, अर्घ चढ़ाय जजूँ जगदीश।।191।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप्ततप्त बल दीप्ति महान्, बिन आहर भि शक्ति महान्।
गणधर देव चरण अमलान, पूजत देवें ऋद्धि निधान।।192।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह अंग चतुर्दश पूर्व, ज्ञाननेत्र से लखें अपूर्व।
श्रुतकेवलि गुरु भव्य सनाथ, पूजत होवे जन्म कृतार्थ।।193।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुत-केवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यजनों के प्रिय आधार, सूरि पालते पंचाचार।
उपाध्याय गुरु साधु मुनीश, त्रयविधि गुरु जजूँ नतशीश।।194।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूपर्वत नगरादि अजीव, पुण्य पुरुष से तीर्थ अतीव।
भवि जीवों को फल दातार, पूजूँ तीर्थ सदा सुखकार।।195।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रकावतीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वप्रकावति के मध्य, रजताचल विद्याधर रम्य।
वहाँ केवलि मुनिगण नित्य, सबको पूजूँ रूचि से इत्य।।196।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थवप्रकावतीदेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधर-श्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधा देश विदेह अनूप, आर्यखंड मे नगरी भूप।
चक्रपुरी में पूजूँ आज,त्रयकालिक तीर्थंकर नाथ।।197।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे चक्रपुरीनगर्यां त्रैकालिकसर्व-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित सब दूरार्थ, अवलोके नित सर्व पदार्थ।
केवलज्ञानी श्री जिनदेव, अर्घ चढ़ाय करूँ उन सेव।।198।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षीणालय ऋद्धि धरंत, अगणित जीव वहाँ निवसंत।
गणधर गुरु को पूजूँ यहाँ, पापपुंज सब खंडें यहाँ।।199।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयुर्वेद निमित्त अष्टांग, सब श्रुत ज्ञान धरें सर्वांग।
उनको नित्य नमूँ पंचांग, अर्घ चढ़ाय लहूं श्रुत सांग।।200।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर भेद विज्ञानी संत, चारण ऋद्धि पाय भ्रमंत।
अकृत्रिम जिनगृह वंदंत, त्रयविध मुनिगण जजूँ तुरंत।।201।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्याय-साधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणक स्थल हों तीर्थ, अन्य और भी बनें पुनीत।
उन तीर्थों को नमूँ त्रिकाल, वे मन शुद्ध करें तत्काल।।202।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधादेश मध्य विजयार्ध, चक्री अर्ध विजय से सार्थ।
विद्याधर के मुनिगण वहाँ, केवलिगण सब पूजूँ यहाँ।।203।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुगंधा नाम विदेह, उसका आर्यखंड शुभ येह।
खड्गपुरी में होते सदा, तीर्थंकर उन पूजूँ मुदा।।204।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे खड्गपुरीनगर्यां त्रैकालिकसर्व-तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक विलोकें सर्व, केवलज्ञानी में गुण सर्व।
उनको पूजूँ हर संदेह, हो जाऊँ मैं शीघ्र विदेह।।205।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के शिष्य प्रधान, चौंसठ ऋद्धि से सुखदान।
गणधर चरणों वंदन करूँ, निजके सब दुख खंडन करूँ।।206।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधरचरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म प्रवाद पूर्व का सार, करते आतम गुण विस्तार।
सर्व शास्त्र का जानें मर्म, उनको जजते हो शिवशर्म।।207।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन से प्रगटें सम्यक्त्व, महार्षियों का यही महत्व।
सूरी पाठक साधू भेद, इनको जजूँ हरूँ भव खेद।।208।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक तीर्थ महान् ,अन्य तीर्थ भी पुण्य निधान।
अतिशय क्षेत्र अन्य भी होंय, उनको जजत सर्वसुख होय।।209।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुगंधादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुगंधा मधि विजयार्ध, विद्याधर नगरों से ख्यात।
केवलि जिन औ साधु महान् , होते वहाँ जजूँ गुणखान।।210।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुगंधादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश गंधिला में षट्खंड, उसमें इक शुभ आरजखंड।
पुरी अयोध्या में तीर्थेश, अर्घ चढ़ाकर जजूँ हमेश।।211।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधिलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अयोध्यानगर्यां त्रैकालिक-सर्वतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरह विध चारित को धार, केवल ज्ञान लिया सुखसार।
दर्पणवत् झलके सब लोक, पूर्ण ज्ञान को जजूँ प्रमोद।।212।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधिलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्ति नास्ति आदिक सत भंग, स्याद्वादमय धरें अभंग।
उन गणधर गुरु को अर्चंत, मिले आत्मगुण सौख्य अनंत।।213।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधिलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर-चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकांतमय धर्म महान्, सब एकांतवाद की हान।
जैनधर्म सब धर्म प्रधान, जजूँ उन्हें इन युत श्रुतखान।।214।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधिलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परकर दत्त लेंय आहार, जिनका युक्ताहार विहार।
उन गुरु के पद पंकज जजूँ, चतुर्गति के दुःख से बचूँ।।215।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधिलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्यो-पाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर से पावन तीर्थ, अन्य अनेक कहाते तीर्थ।
उन सबको पूजूँ मन लाय, रोग शोक दुःख दारिद जाय।।216।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधिलादेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश गंधिला मधि विजयार्ध, विद्याधर से बना कृतार्थ।
उस पर केवलि ओर मुनीश, सबको जजूँ नमाकर शीश।।217।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधिलादेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी देश विदेह, आर्यखंड में नगरी येह।
पुरी अवध्या में तीर्थेश, जजूँ सुबाहु और सब ईश।।218।।

ॐ ह्री जम्बूद्वीपस्थगंधमालिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे अवध्यानगर्यां त्रैकालिकसर्व–तीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निश्चय औ व्यवहार त्रिरत्न, इनको लेकर किया प्रयत्न।
निज में ज्ञानसूर्य प्रकटाय, उन सबको पूजूँ मन लाय।।219।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधमालिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकविंदुसार तक शास्त्र, उनके ज्ञानी गण आचार्य।
गणधर देवों के चरणाब्ज, जजते खिले भव्य मन अब्ज।।220।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधमालिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वगणधर–चरणेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शास्त्रज्ञान है नेत्र तृतीय, उन युत श्रुतज्ञानी अद्वितीय।
उनके पद की पूजा करूँ, निज आतम सुख अनुभव करूँ।।221।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधमालिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वश्रुतकेवलिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरी पाठक साधू अनंत, तीनों काल वहाँ विहरंत।
उनका नाम मंत्र जो लेय, सो सब दुःख जलांजलि देय।।222।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधमालिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्व-आचार्योपाध्यायसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ नाथ से बनते तीर्थ, जहाँ प्रवर्ते धर्म सुतीर्थ।
सब तीर्थों को पूजूँ यहाँ, आत्म विशुद्धी करते यहाँ।।223।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधमालिनीदेशविदेहक्षेत्रार्यखंडे त्रैकालिकसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी देश सुबीच, कहा रजतगिरि शुभ्र गिरीश।
उस पर विद्याधर के वहाँ, केवलि मुनिगण अर्चूं यहाँ।।224।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थगंधमालिनीदेशविदेहमध्यविजयार्धपर्वतस्य विद्याधरश्रेणीषु त्रैकालिकसर्वकेवलिश्रुतकेवलिसाधुभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–पूर्णार्घ्य

बत्तिस देश विदेह में, जिनवर मुनिगण आदि।
पूरण अर्घ चढ़ायके, जजूँ हरूँ भव व्याधि।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थद्वात्रिंशद्विदेहक्षेत्रसंबंधिसर्वतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलिसर्वसाधुभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)–

इन शाश्वत क्षेत्र विदेहों में, नित आर्यिकाएँ विचरण करतीं।
सम्यक्त्वरत्न से भूषित हों, रत्नत्रय का पालन करतीं।।
इनमें गणिनी मातायें भी, संयतिकाएं जग वंदित हैं।
नर चक्रवर्ति श्रावकगण से इन्द्रादिक से भी पूजित हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रसंबंधिगणिनीसमेतसर्वसंयतिकार्यिकाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐलक, क्षुल्लक ग्यारह प्रतिमा-धारी वहाँ विचरण करते हैं।
सम्यक्त्वरत्न से भूषित हैं, संसारजलधि से तिरते हैं।।

उन सबको इच्छामि करके, हम अर्घ्य चढ़ाकर नमते हैं।
ये परम्परा से शिव पाते, हम इनकी भक्ती करते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रसंबंधिसर्व-ऐलकक्षुल्लकेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन शाश्वत क्षेत्र विदेहों में, जितनी क्षुल्लिकाएँ विचरण करतीं।
हम उनको अर्घ्य चढ़ा करके, इच्छामि करें वे देशव्रती।।
ये ग्यारह प्रतिमा धारण कर, सम्यक्त्वरत्न से भवहरिणी।
श्रावकगण से ये पूजित हैं, इनकी भक्ती भी भवतरणी।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रसंबंधिसर्वक्षुल्लिकाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य—ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि-द्वात्रिंशत्विदेहक्षेत्रस्थसर्वतीर्थंकरकेवलि-गणधरश्रुतकेवलिसर्वसाधुभ्यो नमः।

जयमाला

-सोरठा-

गणपति मुनिपति वंद्य, सुरपति नरपति से नमित।
पूजूँ भक्ति अमंद, आनन्द कंद जिनंद को।।1।।

-गीता छंद-

जय-जय जिनेश्वर तीर्थंकर, जय केवली जिन साधुवर।
जय-जय गणीश्वर ऋद्धिधर, श्रुतकेवली श्रुतज्ञानधर।
जय-जय चतुर्विध संघनायक, सूरिवर पाठक सकल।
जय-जय मुनीश्वर साधुगण, जय-जय कल्याणक तीर्थथल।।2।।

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा, कच्छकावति देश हैं।
आवर्त लांगलवर्त पुष्कल, पुष्कलावति देश हैं।।
वत्सा सुवत्सा महावत्सा, वत्सकावति जानिये।
रम्या सुरम्या रम्यणीया, मंगलावति मानिये।।3।।

पद्मा सुपद्मा महापद्मा, पद्मकावति क्षेत्र हैं।
शंखा व नलिनी कुमुद सरिता, पश्चिमी दिश देश हैं।
वप्रा सुवप्रा महावप्रा, वप्रकावति जानिये।
गंधा सुगंधा गंधिला औ, गंधमालिनी मानिये।।4।।

बत्तिस विदेह सुख्यात हैं, प्रत्येक में छह खंड हैं।
हैं पांच पांच म्लेच्छ खंड, इक-इक सु आरज खंड हैं।।
प्रत्येक आरज खंड में, है राजधानी मध्य में।
तीर्थेश चक्री हलधरादिक, जन्मते हैं इन्हीं में।।5।।

तीर्थेश पंच कल्याणकों के, ईश धर्म चलावते।
कुछ तीन कल्याणक व दो, कल्याणकों को पावते।।
इनके समवसरणादि में, गणधर रहें मुनिगण रहें।
बारह सभा के भव्यगण, सुन दिव्यध्वनि शिवपद लहें।।6।।

यहँ शाश्वती है कर्म भू, शिव के किवाड़ खुले रहें।
दुर्भिक्ष ईती भीति औ, पर चक्र आपद ना रहें।
यहाँ न्यूनतम से चार तीर्थंकर अधिक बत्तीस हों।
उन सर्व के पादाब्ज में, संतत नमाऊँ शीश को।।7।।

एकेन्द्रियादिक योनियों में, नाथ! मैं रुलता रहा।
चारों गती में ही अनादी, से प्रभो भ्रमता रहा।।
मैं द्रव्य क्षेत्र रु काल भव औ, भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अंनता–नंत काल विता दिये।।8।।

बहु जन्म संचित पुण्य से, दुर्लभ मनुष योनी मिली।
हा! बालपन में जड़ सदृश, सज्ज्ञानकालिका ना खिली।।
बहु पुण्य के संयोग से, प्रभु आपकी पूजा करें।
अब शक्ति ऐसी दीजिये, निज के अखिल गुणमणि भरें।।9।।

हे नाथ! बहिरातम दशा को, छोड़ अन्तर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें, हो जाऊँ मैं परमातमा।।

संसार का संसरण तज, त्रिभुवन शिखर पे जा बसूं।
निज के अनंतानंत गुण को, पाय निज में ही बसूं।।10।।

–दोहा–

तुम प्रसाद से भक्तगण, हो जाते भगवान्।
'ज्ञानमती' निज संपदा, पा करके धनवान्।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वात्रिंशद्विदेहसंबंधिसर्वतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुतकेवलि–सर्वसाधुसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो भव्य जंबूद्वीप के, तीर्थंकरो को तीर्थ को।
केवलिप्रभू, गणधरगुरु, श्रुतकेवली सब साधु हो।।
नित पूजते हैं भक्ति से, वे आत्मनिधि को पावते।
फिर 'ज्ञानमति' रविकिरण से, भविजन कमल विकसावते।।1।।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र में, चउ जिनवर विहरण करते हैं।
पूरब धातकि पश्चिम धातकि में, चउ चउ जिनवर राजत हैं।।
पूर्वापर पुष्करार्ध में भी, चउ चउ तीर्थंकर शोभ रहें।
इन बीस तीर्थंकर को यजते, हम परम अतीन्द्रिय सौख्य लहें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं जम्बूद्वीपविदेहक्षेत्र- पूर्वधातकीखण्डद्वीप-पश्चिमधातकीखण्ड-द्वीपसंबंधिविदेहक्षेत्र-पूर्वपुष्करार्धद्वीप-पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविदेह-क्षेत्रस्थितविद्यमान-श्रीसीमंधर-युगमंधर-बाहु-सुबाहु-संजातक-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनंतवीर्य-सूरिप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चंद्रानन-चंद्रबाहु-भुजंगम-ईश्वरनाथ-नेमिप्रभ-वीरसेन-महाभद्र-देवयश-अजितवीर्यनामविंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिः।

बड़ी जयमाला

-सोरठा-

चिन्मय ज्योति स्वरूप, परमात्मा होते यहीं।
नमूँ नमूँ चिद् रूप, चिंतामणि चैतन्य को।।1।।

-शंभु छंद-

जय जय अर्हंत देव जिनवर, जय जय छ्यालिस गुण के धारी।
जय समवसरण वैभव श्रीधर, जय जय अनंत गुण के धारी।।
जय जय जिनवर केवलज्ञानी, गणधर अनगार केवली सब।
जय गंधकुटी में दिव्यध्वनी, सुनते असंख्य सुर नर पशु सब।।2।।

इन चौंतिस कर्मभूमियों में, केवलज्ञानी होते रहते।
फिर कर्म अघाती भी हनकर, वे सिद्धि वधू वरते रहते।।
ऐसे ये सिद्ध अनंत हुये, हो रहे और भी होवेंगे।
जय जय सब सिद्धों की वे मुझ सिद्धि में निमित्त होवेंगे।।3।।

निज साम्य सुधारस आस्वादी, मुनिगण जहँ नित्य विचरते हैं।
आचार्य प्रवर चउविध संघ के, नायक जहँ मार्ग प्रवर्ते हैं।।
दीक्षा शिक्षा देकर शिष्यों, पर अनुग्रह निग्रह भी करते।
प्रायश्चित देकर शुद्ध करें, बालकवत् पोषण भी करते।।4।।

गुरु उपाध्याय मुनि अंग पूर्व, शास्त्रों का वाचन करते हैं।
चउविध संघों को यथायोग्य, श्रुत का अध्यापन करते हैं।।
मिथ्यात्व तिमिर से मार्ग भ्रष्ट, जन को सम्यक् पथ दिखलाते।
जो परंपरा से गुरुमुख से, पढ़ते वे निज निधि को पाते।।5।।

निज आत्म साधना में प्रवीण, अतिघोर तपस्या करते हैं।
वे साधू शिवमारग साधें, बहु ऋद्धि सिद्धि को वरते हैं।।
विक्रिया ऋद्धि चारण ऋद्धी, सर्वौषधि ऋद्धी धरते हैं।।
अक्षीणमहानस ऋद्धी से, सब जन को तर्पित करते हैं।।6।।

इन चौंतिस कर्मभूमियों में, जन्में ही मुनि बन सकते हैं।
फिर गगन गमन ऋद्धी बल से, सर्वत्र भ्रमण कर सकते हैं।।
वे ढाई द्वीप तक ही जाते, उससे बाहर नहिं जा सकते।
नर जन्म व मुक्ती मार्ग यहीं, यहां से ही सिद्धि पा सकते।।7।।

तीर्थंकर धर्म चक्रधारी, जिन धर्म प्रवर्तन करते हैं।
इन कर्मभूमियों में ही वे, शिव पथ का वर्तन करते हैं।।
जय जय इस जैन धर्म की जय, यह सार्वभौम है धर्म कहा।
सब प्राणिमात्र को अभयदान, देवे सब सुख की खान कहा।।8।।

तीर्थंकर के मुख से खिरती, वाणी सब जन कल्याणी है।
गणधर गुरु उसको धारण कर, सब ग्रंथ रचें जिनवाणी है।।
गुरु परम्परा से अब तक भी, यह सारभूत जिनवाणी है।
इसकी जो पूजा भक्ती करें, उनके भव भव दुख हानी है।।9।।

इस जंबूद्वीप की आठ सहस, अरु चार शतक चौबिस प्रतिमा।
उनचास सहस चउ सौ चौंसठ, ये मध्यलोक की जिन प्रतिमा।।
नवसौ पचीस कोटि त्रेपन अरु, लाख सत्ताइस सहस कहीं।
नवसौ अड़तालिस जिनप्रतिमा, इन सबको मैं नित नमूँ सही।।10।।

व्यंतर ज्योतिष के असंख्यात, जिनगृह की जिनप्रतिमायें हैं।
प्रति जिनगृह इक सौ आठ, एक सौ आठ रहें प्रतिमायें हैं।।
इस जंबूद्वीप के अकृत्रिम, जिनमंदिर अट्ठत्तर ही हैं।
जिनमंदिर शाश्वत चार शतक, अट्ठावन मध्यलोक में हैं।।11।।

ये सात करोड़ बहत्तर लख, जिनमंदिर भवनवासि के हैं।
चौरासी लाख सत्तानवे, हजार तेइस वैमानिक के हैं।।
अठ कोटि सुछप्पन लक्ष सत्तानवे, सहस चार सौ इक्यासी।
सब जिनगृह व्यंतर ज्योतिष के, उन संख्यातीत कही राशि।।12।।

इन कर्म भूमि में अगणित भी, कृत्रिम जिनगृह जिनप्रतिमायें।
सुरपति चक्री हलधर आदिक, नर सुरकृत वंदत सुख पाएं।।
जो प्रतिमा प्रातिहार्य संयुत, अरु यक्ष यक्षिणी से युत हैं।
निज चिह्न व मंगल द्रव्य सहित वे अर्हंतों की प्रतिकृति हैं।।13।।

सब प्रातिहार्य चिह्नादि रहित, प्रतिमा सिद्धों की कहलाती।
अथवा अकृत्रिम प्रतिमायें, सब सिद्धों की मानी जाती।।
आचार्य उपाध्याय साधु की, प्रतिमायें कर्मभूमि में हैं।
कुछ पंचपरमेष्ठी नव देवों, की प्रतिमायें भी निर्मित हैं।।14।।

अर्हत सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु पंच परमेष्ठी हैं।
जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा, जिनगृह सब मिल नवदेव कहें।।
ये होते कर्मभूमियों में, हो चुके अनंतों होवेंगे।
इन सबको वंदन बार बार, भक्तों के कलिमल धोवेंगे।।15।।

इन कर्मभूमि की महिमा से ही, जंबूद्वीप महान कहा।
निज आत्म सुधारस आस्वादी, मुनिगण करते हैं वास यहां।।
बहिरात्म अवस्था छोड़ अंत–रात्मा बन नर पुरुषार्थ करें।
परमानंदामृत आस्वादी, परमात्मा बन शिवनारि वरें।।16।।

जय जय सुमेरु पर्वत कृत्रिम, इक सौ इक फुट ऊंचा सुन्दर।
सोलह जिनमंदिर जिनप्रतिमा से, शोभ रहा अतिशय मनहर।।
इसके दर्शन से पाप टलें, हो पुण्य प्रगट जग में ख्याती।
जन मनोकामना जो करते, वह शीघ्र सफल देखी जाती।।17।।

जय जय जंबूतरु शाल्मलि तरु, के जिनमंदिर जिनप्रतिमायें।
जय जंबूद्वीप के जिनमंदिर, जय उनमें राजित प्रतिमायें।।
जय देवभवन के इक सौ तेइस, जिनगृह जिनप्रतिमाओं की।
जो रुचि से यहां दर्श करते, वे वंदें अकृत जिनालय भी।।18।।

-घत्ता-

जय जय तीर्थंकर, विश्व हितंकर, धर्मचक्रधर तुमहिं नमूँ।
जय 'ज्ञानमती' को, केवल कर दो, निजगुण भर दो नित प्रणमूँ।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थ द्वात्रिंशद्विदेहसंबंधिसर्वतीर्थंकरकेवलिगणधरश्रुत-केवलिसर्वसाधुसर्वतीर्थक्षेत्रेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीताछंद-

जो भव्य जंबूद्वीप के तीर्थंकरों को तीर्थ को।
केवलि प्रभू, गणधर गुरु, श्रुतकेवली सब साधु को।
नित पूजते हैं भक्ति से वे आत्मनिधि को पावते।
फिर 'ज्ञानमति' रविकिरण से, भविजन कमल विकसावते।।1।।

इत्याशीर्वादः।

प्रशस्ति

–दोहा –

ऋषभदेव से वीर तक तीर्थंकर प्रभु ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीर प्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूल-संघ में कुंदकुंद गुरु, अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कार गण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, दीक्षागुरु उर धार्य।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, चालिस जगत्प्रसिद्ध।
पौष कृष्ण चौदश तिथी, हस्तिनागपुर तीर्थ।।7।।

जिनभक्तीवश मम रचित, विदेहक्षेत्र विधान।
जंबूद्वीप विधान से, उद्धृत महिमावान।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्व विख्यात।।9।।

(इति श्रीजम्बूद्वीपविदेहक्षेत्रविधानं संपूर्णं)
वर्द्धतां जिनशासनं।

भजन

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

तर्ज-मेरे देश की धरती.....

श्री जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्र में जिनवर बिम्ब विराजें,
जो भक्ति करें सुख पाते-2।।0।। हो-हो-हो.....

है एक लाख योजन ऊँचा, पर्वत सुमेरु कहलाता है-पर्वत.....
इस मध्यलोक के मध्य प्रथम, यह जम्बूद्वीप सुहाता है-यह जम्बूद्वीप.
इसमें सीमंधर तीर्थंकर, ये पूर्व विदेह में राजें।
श्री जम्बूद्वीप.....।।1।।

इस जम्बूद्वीप विदेह में, सब बत्तीस विदेह कहाते हैं-बत्तीस.....
उनमें युगमंधर तीर्थंकर को, भक्त भक्ति से ध्याते हैं-भक्त.....
उन मुनिगण, तीर्थंकर, केवलि की करें वंदना आके।
श्री जम्बूद्वीप.....।।2।।

तीर्थंकर श्री बाहू तृतीय, प्रभु धर्मामृत बरसाते हैं-प्रभु.....
मृगचिन्ह सहित विहरण करते, सब भविजन मन हरषाते हैं-सब.....
'श्री बाहू' वीतशोकपुरि के, राजा, रानी से जन्में।
श्री जम्बूद्वीप.....।।3।।

तीर्थेश सुबाहु के वन्दन से, पाप टले और पुण्य जगे-पाप.....
मैं जजूँ चार तीर्थंकर को, जो जन-जन का उद्धार करे-जो.....
इन चरणों का आश्रय ले 'बीना', जन्म सफल हो जाए।
श्री जम्बूद्वीप.....।।4।।

जम्बूद्वीप विदेहक्षेत्र विधान की आरती

-ब्र. कु. दीपा जैन (संघस्थ)

तर्ज-जहाँ डाल-डाल पर सोने की.....

श्री जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्र की, सब मिल करे आरतियाँ-
भक्ती से करें आरतिया-2
इसमें सीमंधर तीर्थंकर, यह पूर्व विदेह में राजें-हाँ पूर्व.....
उन सब तीर्थंकर भगवन्तों की, आरति से दुःख भागे-हाँ आरति.....
यहाँ पूरब एवं अपर विदेह में चार जिनेश्वर राजे-
ये समवसरण में राजें।
श्री जम्बूद्वीप.....।।1।।

इस जम्बूद्वीप विदेह क्षेत्र में, बत्तिस विदेह कहाते-हाँ बत्तिस.....
उनमें युगमंधर तीर्थंकर को, भक्ति से नित ध्याते-हाँ भक्ति से.....
उन मुनिगण, तीर्थंकर केवलि को, नितप्रति शीश झुकाते।
भक्ति से शीश झुकाते।
श्री जम्बूद्वीप.....।।2।।

तीजे तीर्थंकर श्रीबाहू, प्रभु धर्मामृत बरसाते-प्रभु....
मृगचिन्ह सहित विहरण करते, सब भविजन मन हरषाते-सब.....
श्री बाहू वीतशोक पुरि के, राजा रानी से जन्में-
ऐसे प्रभु को हम प्रणमें-
श्री जम्बूद्वीप.....।।3।।

तीर्थेश सुबाहू की आरति से, पाप सभी टलते हैं-हाँ.....
चारों तीर्थेश्वर के वंदन से, मोक्ष द्वार खुलते हैं-हाँ.....
"दीपा" इन चरणों का आश्रय ले, जन्म सफल हो जाये-
हम यही भावना भाये।
श्री जम्बूद्वीप.....।।4।।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्रचक्रवर्ती
श्री शांतिसागर जी महाराज

आचार्य श्री शांतिसागर जी के
प्रथम पट्टाधीश एवं पूज्य गणिनी
श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षागुरु
आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में निर्मित नंद्यावर्त महल

भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी (देवरिया) उ.प्र. में निर्मित भव्य जिनमंदिर

978-93-87891-40-1